UnderStand UPSC
What we UnderStand, We Conquer

CONQUER
MAINS 2027

UPSC 2024/25 में 200+ रैंकर देने वाला एकमात्र प्रोग्राम

सामान्य अध्ययन 1:
आधुनिक भारत
संक्षिप्त नोट्स

Satyam Jain
(3 UPSC CSE Interviews, Mentor to 300+ Rankers Including AIR-1, Published Author)

Call For More Info 8377072252
Ground floor, 11B, Bada Bazar Road, Old Rajender Nagar, New Delhi - 110060
understand.upsc | UnderStandUPSC.com | : UnderStand UPSC

* आधुनिक इतिहास *

01. भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन

✓ पुर्तगाली (1498) ✓ अँग्रेज (1600)
✓ डच (1602) ✓ फ्रांसीसी (1664) ✓ डेनिश

◎ औपनिवेशिक शक्तियों के भारत आने के कारण :-

1> व्यापार से लाभ कमाना
2> मसालों (मांस संरक्षण) मांग
3> जहाज हेतु कच्चा माल
4> जिज्ञासा
5> औपनिवेशिक आकांक्षा
6> बिचौलियों समाप्ति
7> ईसाई धर्म प्रसार (?)

◎ पुर्तगाली -

1> वास्को डी गामा - 1498 - फैक्ट्री (कन्नौर)
2> कैब्राल - 1500 में सूरत फैक्ट्री
3> अल्मेडा - ब्लू वॉटर पॉलिसी / कार्टज प्रणाली
4> अल्बुकर्क - 1510 में गोवा पर अधिकार
5> कुन्हो - मुख्यालय कोचिन से गोवा।

◎ पुर्तगालीयों का योगदान -

1> नई फसलें एवं फल [तंबाकू, पपीता]
2> ईसाई धर्म प्रचार (चर्च, लैटिन रीति)
3> प्रिंटिंग प्रेस [प्रथम: 1st गोवा (1556)]
4> स्थापत्य - कला [गॉथिक, रोकोको शैली]
5> समुद्री तकनीक विकास
6> पुर्तगाली भाषा के अनेक शब्द भा० भाषाओं में आए।
7> अल्बुकर्क ने स्थानीय महिलाओं से विवाह को प्रोत्साहित किया।
8> नौसेना, सैन्य तकनीक व तोपखानों का विकास।
9> मसाला उत्पादन को बढ़ावा।

◎ पुर्तगाली पतन के कारण -

1. विश्व में शक्तिशाली राजवंशों का उदय।
2. राजनीतिक व धार्मिक तनाव।
3. अंग्रेजों तथा डचों जैसी यूरोपीय प्रतिस्पर्धा
4. भ्रष्टाचार व अनैतिक कार्य।
5. ब्राजील पर अधिक ध्यान देना।
6. गोवा में धार्मिक उत्पीड़न।
7. बैसीन, सालसेट क्षेत्रों का नुकसान।

◎ डच :-

1. 1596 - कॉर्नेलिस डी हाउटमैन आगमन।
2. मुख्य रुचि - इंडोनेशिया द्वीपसमूह एवं मसाला व्यापार।
3. प्रमुख फैक्ट्रियाँ - पीटापुली, मछलीपटनम, बिमलीपट्टनम।
4. अंग्रेज - डच प्रतिद्वंद्विता -
   - 1667 संधि → डचों ने भारत छोड़ा ✓
   - हुगली युद्ध (1759) → 1795 तक पूर्ण निष्कासन

◎ अंग्रेज [ईस्ट इंडिया कंपनी - 1600]

1. पहली फैक्ट्री - मछलीपटनम (1611)
2. बाद में - बंबई, मद्रास, कलकत्ता।
3. 1715 - फर्रुखसियर का फरमान।
4. रॉबर्ट क्लाइव → उत्कृष्ट सैन्य नेतृत्व
   - प्लासी युद्ध
   - इलाहाबाद संधि
   - → बंगाल में द्वैध शासन.
   - → प्रशासनिक सुधार।

◎ फ्रांसीसी [1664] फैक्ट्रियाँ ⇒ पांडिचेरी, सूरत, कलकत्ता आदि।

✓ ~~फैक्ट्रियां~~ डुप्ले प्रथम फ्रांसीसी (गवर्नर)

◉ फ्रांसीसियों का योगदान -

1. फ्रांसीसी भाषा - शिक्षा
2. शहरी नियोजन, वास्तुकला [बरोक, नव-शास्त्रीय शैली]
3. ईसाई धर्म (कैथोलिक) प्रसार
4. सैन्य संगठन व रणनीति
5. सांस्कृतिक प्रभाव - भोजन, पहनावा, रीति-रिवाज [पॉन्डिचेरी - लिटिल फ्रांस]
6. कानून व प्रशासनिक व्यवस्था।

◉ आंग्ल - फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता के कारण -

1. व्यापारिक प्रतिस्पर्धा
2. यूरोप की औपनिवेशिक - प्रतिद्वंद्विता [ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार, सात सप्त वर्षीय युद्ध]
3. भारत में क्षेत्रीय महत्वकांक्षा
4. सैन्य श्रेष्ठता व किलाबंदी
5. नौसैनिक प्रभुत्व।

◉ आंग्ल - फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता के परिणाम -

1. प्रथम कर्नाटक युद्ध (1740-48) ⇒ ~~एक्स-ला~~-शैपेल सान्धि [1748]
2. द्वितीय कर्नाटक युद्ध [1749-54] ⇒ अनिर्णायक।
3. तृतीय कर्नाटक युद्ध (1758-63) [वांडीवाश युद्ध (1760), पेरिस संधि (1763)]

◉ फ्रांसीसियों की पराजय के कारण -

1. राज्य का अधिक नियंत्रण → जिससे निर्णय धीमे।
2. कमजोर नौसेना
3. केवल एक आधार पर निर्भरता।
4. योग्य सेनापति कमी
5. धन की कमी
6. नेतृत्व, मनोबल की कमी।

अंग्रेजों की सफलता के कारण :

1. निजी कंपनी से → नौकरशाही निर्णयन में देरी नहीं।
2. शक्तिशाली नौसेना व रणनीतिक बंदरगाह।
3. व्यापार - विस्तार के बीच संतुलन।
4. उत्कृष्ट नेतृत्व, सैन्य कमान 5. औद्योगिक क्रांति के लाभ
6. भारतीय शासकों से गठबंधन।
7. ईसाई धर्म के प्रचार को लेकर अपेक्षाकृत कम उत्साह।

भारत में प्रचलित परिस्थितियाँ -

a. राजनीतिक -

1. मुगल साम्राज्य का पतन [औरंगजेब मृत्यु, 1707]
2. क्षेत्रीय राज्यों उदय [उत्तराधिकारी राज्य | स्वतंत्र राज्य | नए राज्य]
3. क्षेत्रीय राज्यों मध्य लगातार युद्ध।
4. विदेशी आक्रमण - नादिर शाह (1739), अहमद शाह अब्दाली (1761)
5. राष्ट्रीय एकता का अभाव।
6. यूरोपीय सैन्य श्रेष्ठता।

b. आर्थिक -

1. आर्थिक असमानता।
2. कृषि पद्धतियों में ठहराव
3. किसानों को लाभ ↓
4. व्यापक आयात - निर्यात
5. निर्यात - उन्मुख विदेशी व्यापार
6. आंतरिक व्यापार में बाधाएँ

c. सामाजिक -

1. पदानुक्रम समाज 2. जाति पंचायतें 3. पर्दा प्रथा
4. मुसलमानों : सामाजिक विभाजन व्यवस्था।
5. मिश्रित (हिन्दू-मुस्लिम) संस्कृति
6. धार्मिक सहिष्णुता 7. पितृसत्तात्मक व्यवस्था।
8. सामाजिक कुरीतियाँ - सती, दहेज, 9. बाल विवाह

d. शिक्षा -

1. परम्परागत एवं पुरानी शिक्षा
2. तर्कसंगत चिंतन का अभाव
3. मौलिक विचारों का अभाव
4. रटने की पद्धति
5. महिला शिक्षा अभाव
6. शिक्षकों को उच्च सामाजिक सम्मान प्राप्त था।

e. संस्कृति -

1. त्रावणकोर (केरल) - मार्तण्ड वर्मा; मलयालम साहित्य का पुनर्जागरण
2. अवध (लखनऊ) - उर्दू साहित्य, कला-संगीत - नृत्य विकास)
3. बाद वर्षों में शाही दरबारों का पतन
4. स्थापत्य कला - इमामबाड़ा, जयपुर आदि।
5. संगीत - मुहम्मद शाह के संरक्षण में।
6. कविता - यांत्रिक, निराशावादी, वास्तविक जीवन से दूर
7. पंजाबी भाषा - हीर रांझा (वारिस शाह)
8. विज्ञान - प्रौद्योगिकी में ठहराव।
9. सांस्कृतिक गतिविधियों में कमी।

ब्रिटेन का उदय -

"एक हाथ में बाइबिल, दूसरे में तलवार और पीठ पर व्यापारिक थैला।"

1. मुगल साम्राज्य पतन, क्षेत्रीय राज्यों ↑ से राजनीतिक विखंडन।
2. ईस्ट इंडिया कंपनी ने आंतरिक विभाजनों का लाभ लिया → सैन्य विजय, संधियाँ, राजनीतिक चालें।

मुगल साम्राज्य का पतन :

1. औरंगजेब : कठोर शासन। 5. सैन्य कमजोरी (सामंती सेना)
2. कमजोर उत्तराधिकारी एवं अमीरों का पतन 6. विशाल साम्राज्य व क्षेत्रीय राज्यों चुनौती
3. वित्तीय कमजोरी 7. औरंगजेब की दक्कन नीति
4. मराठों का उदय (पेशवा-बाजीराव)
8. नादिर शाह का 1739 का आक्रमण।

क्षेत्रीय शक्तियाँ एवं ब्रिटिश सुदृढ़ीकरण -

1. मैसूर → सहायक संधि 4. पंजाब → 2 आंग्ल-सिख युद्ध
2. हैदराबाद → सहायक संधि
3. मराठा → आंग्ल-मराठा युद्ध 5. अवध → कुशासन सिद्धांत

ब्रिटिशों द्वारा विलय हेतु अपनाई गई नीतियाँ :

1. लैप्स का सिद्धांत - लॉर्ड डलहौज़ी [सतारा, संबलपुर, उदयपुर, झाँसी, नागपुर]
2. सहायक सन्धि → लॉर्ड वेलेज़ली. [हैदराबाद, अवध]
3. रिंग फेंस नीति → वॉरेन हेस्टिंग्स : अवध
4. श्रेष्ठ निष्क्रियता नीति (अफगान - आंग्ल युद्ध बाद) (पहला)

भारत में ब्रिटिशों के एकमात्र विदेशी शक्ति के रूप में उभरने के कारण -

1. मजबूत नौसैनिक शक्ति (वांडिवाश युद्ध)
2. ईस्ट इंडिया कंपनी रणनीति - प्लासी, बक्सर
3. भारतीय राज्यों के आपसी मतभेद का लाभ उठाया
4. यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों की पराजय (फ्रांसीसी) (मराठा)
5. कुशल प्रशासन व शक्तिशाली सेना (बंगाल सेना)
6. आर्थिक संसाधन (ब्रिटेन, बंगाल)
7. ब्रिटिश गृह सरकार द्वारा आर्थिक समर्थन।

02. ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियाँ

1) आर्थिक नीति –

"ब्रिटेन ने भारत की संपत्ति और संसाधनों का प्रयोग भारत के विकास हेतु नहीं बल्कि, अपने साम्राज्यवादी हितों के लिए किया –"
✓ दादाभाई नौरोजी

तीन चरण –

① वाणिज्यवादी चरण (1757-1813)
- भारत की सम्पत्ति, कच्चे माल का उपयोग ब्रिटेन की औद्योगिक क्रान्ति हेतु
- (भारत का कच्चा माल की आपूर्तिकर्ता कार्य)
- (बना माल हेतु भारत बाजार के रूप में)
- (धन निकासी व व्यापार एकाधिकार)

② औद्योगिक पूँजीवाद चरण (1813-1858)
- भारत में योजनाबद्ध औद्योगिक पतन
- पश्चिमीकरण [ढाका मलमल उद्योग पतन]
- औद्योगिक पतन, मुक्त व्यापार

③ वित्तीय पूँजीवाद चरण (1858-1947)
- संसाधनों के दोहन, लाभ कमाने हेतु
- ब्रिटिश पूँजी का आधारभूत संरचना में निवेश
- कच्चे माल का अधिकाधिक दोहन तथा ब्रिटिश व्यापार बढ़ावा (रेलमार्ग, नहर, बागान)
- ↳ आधारभूत संरचना का विकास मुख्यतः संसाधन दोहन हेतु

2) विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव –

(A) वस्त्र उद्योग –

① औद्योगिक क्रान्ति → बेरोजगारी ↑ [ढाका मलमल उद्योग पतन]

② मुक्त व्यापार नीति (चार्टर अधिनियम, 1813)
- ब्रिटिश कपड़ों पर आयात शुल्क ×
- बंगाल के बुनकरों की आजीविका समाप्त (~ 6 लाख से 1 लाख रह गए)

③ भारत के वस्त्रों पर ब्रिटेन में भारी आयात शुल्क : वैश्विक बाजार की हानि → निर्यात ↓

④ जबरन व्यवसायीकरण व कच्चे माल का दोहन → परंपरागत हस्तशिल्प का विनाश।
- बेरोजगारी ↑ → लोग कृषि ओर बढ़े।

⑤ कपास → ब्रिटेन के मैनचेस्टर मिलों को भेजी गयी।
- शुल्क-मुक्त आयात का प्रभुत्व।

(B) व्यापार –

① भारत को औपनिवेशिक व्यापार प्रणाली में जबरन शामिल किया गया।
② भारतीय उद्योग अविकसित रह गये।
③ धन निकासी : होम-चार्जेस, सैन्य व्यय।
④ भारतीय महाजनी व व्यापारी वर्ग का विनाश।

(C) कृषि –

① खाद्यान्न फसलों की जगह नकदी फसलें।
② स्थायी बंदोबस्त व ऊँचे भू-राजस्व माँग।
 उदा: बंगाल अकाल (1943)
③ कृषि व्यवसायीकरण [अफीम, नील खेती]
④ जमींदार – महाजनों द्वारा शोषण।
⑤ कृषि अधिशेष की निकासी।
⑥ सिंचाई, आधारभूत संरचना की उपेक्षा।

(D) आधारभूत संरचना –

① कच्चे माल एवं सैनिकों की तेज आवाजाही।
② संसाधनों के दोहन हेतु रेलमार्ग।
③ राजनीतिक – प्रशासनिक नियंत्रण।
④ आधारभूत संरचना से प्राप्त लाभ ब्रिटेन भेजा
⑤ नहरों का उपयोग मुख्यतः व्यावसायिक फसलों हेतु।

3) भू-राजस्व नीतियाँ –

① स्थायी बंदोबस्त : लॉर्ड कॉर्नवालिस →
- ↳ बंगाल, 1793 (ब्रिटिश क्षेत्र का ~19%)
- ↳ जमींदार भूमि के स्वामी बने।
- ↳ निश्चित कर
- ↳ उपभूस्वामित्व एवं अनुपस्थित जमींदारी।
- ↳ किसानों के अधिकार जमींदारों को स्थानांतरित
- ↳ कृषकों के परम्परागत अधिकार समाप्त।
- ↳ जमींदारों द्वारा अत्यधिक लगान, शोषण-बेदखली

② रैय्यतवाड़ी व्यवस्था – (मुनरो व रीड)
- ↳ सीधे रैय्यत से समझौता
- (ब्रिटिश क्षेत्र का ~51%) (वेद्री)
- ↳ भू-राजस्व 40(45-50%) तक →
- ↳ 1876-78 का मद्रास अकाल।

③ महालवाड़ी व्यवस्था (उत्तर भारत, 1822)
- ↳ "महाल" से समझौता।
- ↳ निर्धनता व विस्थापन
- ↳ 1857 के विद्रोह का कारण

ब्रिटिश साम्राज्य की आर्थिक आलोचना –

① दादाभाई नौरोजी → "धन निकासी सिद्धांत"
[पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इण्डिया]

② आर॰सी॰दत्त → भूमि राजस्व, अकाल, कृषि पर अध्ययन।
"द इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया"

③ एम॰जी॰रनाडे – औद्योगिक पतन
"एसे ऑन इण्डियन इकोनमी"

④ गोपाल कृष्ण गोखले – सैन्य व्यय, करों पर बोझ
[इंपीरियल लेजिस्लेटिव कांउसिल में बजट भाषण]

⑤ महात्मा गाँधी → "हिंद स्वराज"

धन निकासी –

दादा भाई नौरोजी : "इंग्लैण्ड डेट टू इंडिया"

"भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने स्वदेशी उद्योगों एवं कृषि को नष्ट किया तथा ऐसा व्यापारिक एकाधिकार स्थापित किया जिसने भारत की संपत्ति को बिना पुनर्निवेश के बाहर भेजा, जिससे गरीबी, निर्भरता बढ़ी"
– कार्ल मार्क्स

घटक –
① ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा धन प्रेषण
② होम चार्जेस
③ सार्वजनिक ऋण पर ब्याज
④ ब्रिटिश कंपनियों का लाभ
⑤ समकक्ष आयातों का अभाव।

प्रभाव – ① भारतीय अर्थव्यवस्था का ठहराव ② गरीबी = अकाल ③ उद्योगों का पतन ④ कृषि पर अत्यधिक निर्भरता ⑤ राष्ट्रवाद उदय

ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की रचनात्मक विरासत –

① रेलवे क्रान्ति ② वाणिज्यिक कृषि विकास
③ आधुनिक बैंकिंग प्रणाली ④ संस्थागत उधार
⑤ कानूनी, संपत्ति संबंधी ढाँचा
⑥ बंदरगाह – व्यापारिक अवसंरचना।

"भारत को इस प्रकार निर्मित किया जा रहा है कि, बाहर से भारतीय रक्त की एक बूंद भी दिखाई नहीं देती"
–(दादा भाई नौरोजी)

रेल, टेलीग्राफ, व्यापार :

↳ ब्रिटिश अर्थव्यवस्था तथा प्रशासनिक नियंत्रण को सुगम बनाया।

रेलवे : (नींव = डलहौजी), प्रथम रेल = बॉम्बे से ठाणे (1853)

सकारात्मक प्रभाव –
① राष्ट्रीय एकीकरण, संपर्क, गतिशीलता।
② आंतरिक व्यापार (↑) ③ अकाल समय सहायता।
④ कच्चे माल में तीव्र परिवहन सुविधा।

औपनिवेशिक उद्देश्य :
① आर्थिक एवं प्रशासनिक आवश्यकता की पूर्ति
② सैनिक की आवाजाही।
③ कच्चे माल का निर्यात
④ ब्रिटिश व्यापार के लिए अनुकूल किराया एवं मालभाड़ा।

भारतीय हितों की उपेक्षा :
① अधिक किराया व मालभाड़ा ② भारतीय स्वामित्व को हतोत्साहित करना।
③ प्रमुख पदों पर ब्रिटिश अधिकारियों की नियुक्ति।

टेलीग्राफ –
→ 1839 : विलियम ओ'शॉघनेसी द्वारा 30 मील की प्रायोगिक टेलीग्राफ लाइन (कलकत्ता बॉटनिकल गार्डन)
→ 1855 : डलहौजी के समय लगभग 3000 मील का नेटवर्क।

*** 1857 के विद्रोह में भूमिका –**
→ समाचार व सैनिकों की तेज संचार व्यवस्था।
→ त्वरित समन्वित प्रतिक्रिया।

*** अन्य उपयोग**
- रणनीतिक एवं प्रशासनिक उपयोग
- शासन पर अधिक नियंत्रण एवं बेहतर प्रशासन
- खुफिया सूचनाओं का आदान-प्रदान
- व्यापारिक संचार को बढ़ावा।
- कानून-व्यवस्था

* ब्रिटिश शासन के अंतर्गत शिक्षा का विकास

*** उद्देश्य –** ① प्रशासनिक दक्षता [वेलेजली - फोर्ट विलियम कॉलेज]
② कम लागत में शासन।
③ आर्थिक शोषण - ऐसे कुशल कर्मचारी तैयार करना जो, ब्रिटिश हितों की सेवा करें।
– "रक्त और रंग से भारतीय, लेकिन रुचि, विचार और बुद्धि से अंग्रेज।" ←
(डाउनवर्ड फिल्ट्रेशन सिद्धांत)

(4) सांस्कृतिक प्रभुत्व (सभ्यता मिशन)
मैकॉले ; एक अच्छी यूरोपीय पुस्तकालय की ---"
(5) राजनीतिक नियंत्रण [ब्रिटिश शासन के प्रति निष्ठावान मानसिकता विकसित करना]
- भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904 → विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण।
(6) अंग्रेजी भाषा का प्रसार [वुड्स डिस्पैच]
(7) दीर्घकालिक साम्राज्यवादी हित।
(8.) धार्मिक एवं मिशनरी उद्देश्य [चार्टर अधिनियम, 1813]

ओरिएंटलिस्ट	एंग्लिसिस्ट
(1) पारंपरिक भारतीय शिक्षा का समर्थन।	(1) आधुनिक शिक्षा का समर्थन।
(2) विलियम जोन्स, जोनाथन डंकन.	(2) जेम्स मिल, टी० बी० मैकॉले।

✓ विलियम बेंटिंक ने मैकॉले के विचारों का समर्थन किया।

- समर्थन मे तर्क –
(1) आधुनिक शिक्षा का परिचय (प्रेसीडेंसी कॉलेज)
(2) शिक्षित मध्य वर्ग का निर्माण (राजा राममोहन राय)
(3.) विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों स्थापना (सेडलर आयोग)
(4.) अंग्रेजी भाषा प्रसार
(5) सामाजिक सुधारों को समर्थन [ब्रह्म समाज]
(6) व्यावसायिक शिक्षा पर बल [हंटर आयोग]
(7) महिला शिक्षा पर बल [1913 का सरकारी शिक्षा प्रस्ताव]
(8.) शिक्षा, पाठ्यक्रम का मानकीकरण (हंटर)
(9) मुद्रण, साहित्य का विकास (हिंदू)

- स्थैतिक कवरेज :
(1) वॉरेन हेस्टिंग्स – कलकत्ता मदरसा,
जोनाथन डंकन – संस्कृत कॉलेज,
वेल्सली – फोर्ट विलियम कॉलेज।
(2.) चार्टर अधिनियम, 1813 :
✓ मिशनरियों को अनुमति ✓ 1 लाख ₹ शिक्षा हेतु
✓ संस्कृत कॉलेज – कलकत्ता, आगरा, दिल्ली।
(3.) मैकॉले का मिनट (1835) : एंग्लिसिस्ट मॉडल
✓ डाउनवर्ड फिल्ट्रेशन सिद्धांत।
(4.) वुड्स डिस्पैच (1854) : भारतीय शिक्षा मैग्ना-कार्टा।
✓ राज्य नियंत्रण ✓ शिक्षा पदानुक्रम ✓ धर्मनिरपेक्ष शिक्षा।
✓ अंग्रेजी → उच्च शिक्षा, स्थानीय भाषा – विद्यालय
✓ महिला – व्यावहारिक शिक्षा।

✓ अनुदान सहायता द्वारा निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन।
(5) हंटर शिक्षा आयोग [1882-83] :
→ प्राथमिक शिक्षा का नियंत्रण स्थानीय निकायों को।
→ माध्यमिक शिक्षा – साहित्यिक एवं व्यावसायिक।
(6) भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904 :
→ अध्ययन व अनुसंधान पर बल।
→ फेलो की संख्या मे कमी।
→ सरकारी नामांकित सदस्यों की संख्या (↑)
→ विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण।
→ 5 लाख/वर्ष 5 वर्ष के लिए उच्च शिक्षा पर व्यय
(7) सैडलर विश्वविद्यालय आयोग (1917-19)
→ 12 वर्ष की स्कूली शिक्षा
→ विश्वविद्यालयों के कठोर नियमों मे कमी।
(8) हर्टोग समिति (1929) –
→ विविधीकृत पाठ्यक्रम
→ पुनश्चर्या पाठ्यक्रम तथा शिक्षक प्रशिक्षण पर बल।

महिलाओं की शिक्षा के लिए उपाय :
(1.) वुड्स डिस्पैच (1854) → महिला शिक्षा को प्रोत्साहन।
(2.) 1854 → बेथ्यून स्कूल की स्थापना।
(3.) हंटर शिक्षा आयोग – प्रेसीडेंसी नगरों के बाहर भी महिला शिक्षा का विस्तार।
(4.) शिक्षा नीति पर सरकारी प्रस्ताव, 1913 :
- व्यावहारिक पाठ्यक्रम
- अधिक महिला शिक्षकों की नियुक्ति
(5) हर्टोग समिति (1929) स्वच्छता, गृह विज्ञान व संगीत पर बल।

(6) उदाहरण –
(1.) गोखले का शिक्षा प्रस्ताव (1910) तथा वर्धा।
बंगाल नेशनल कॉलेज (1906) की बुनियादी शिक्षा योजना
(2.) 1847 – रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज।
1856 – कलकत्ता इंजीनियरिंग कॉलेज।
(पूसा कृषि संस्थान)
(3) द्वैध शासन के अंतर्गत शिक्षा (1919) → विषय प्रांतों को हस्तांतरित
(4) भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, (1904) – प्रत्येक प्रांत मे विश्वविद्यालय।

प्रश्न भारतीय शिक्षा की वर्तमान संरचना एवं कार्यप्रणाली मे ब्रिटिश औपनिवेशिक शिक्षा की विरासत किन-किन रूपो मे दिखाई देती है ?

[उत्तर प्रारूप : ब्रिटिश कालीन व्यवस्था → नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 के सुधार]

① अँग्रेजी माध्यम – मातृभाषा / क्षेत्रीय भाषा को कक्षा 5-8 तक बनाया।

② परीक्षा-केन्द्रित प्रणाली – दक्षता-आधारित शिक्षा, सतत मूल्यांकन एवं समग्र रिपोर्ट कार्ड।

③ पदानुक्रमीय संरचना (प्राथमिक-विश्वविद्यालय) → 5+3+3+4 संरचना

④ विश्वविद्यालय केन्द्रित मॉडल → स्वायत्त महाविद्यालय एवं बहुविषयक विश्वविद्यालय।

⑤ नौकरशाही नियंत्रण – विकेन्द्रीकरण एवं स्थानीय शासन।

⑥ सिविल सेवा उन्मुख शिक्षा – व्यापक करियर तैयारी।

⑦ व्यावसायिक शिक्षा उपेक्षा – कक्षा 6 से व्यावसायिक प्रशिक्षण।

⑧ शहरी-ग्रामीण शिक्षा विभाजन – डिजिटल एवं आधारभूत ढांचे का उन्नयन।

⑨ प्राच्य शिक्षा की उपेक्षा → बहुभाषिकता ⑦

⑩ अनुसंधान एवं विकास मे कम निवेश → उच्च शिक्षा संस्थानों में अनुसंधान एवं NRF

मूल्यांकन :

1. अँग्रेजी शिक्षा का प्रसार धीमा रहा।
2. पाश्चात्य विचारों का प्रसार हुआ, परंतु अभिजात वर्ग तक सीमित रहा।
3. ~~एम. आर. टैगोर~~ ने मानवीय मूल्यों/विचारों की उपेक्षा बताया।
4. औपनिवेशिक शिक्षा का उद्देश्य ब्रिटिश राजनीतिक नियंत्रण को मजबूत करना था।

ब्रिटिश शासन के अधीन सिविल सेवाओं का विकास :-

● औपनिवेशिक प्रशासन के स्तंभ के रूप मे सिविल सेवा – ① राजस्व संग्रह (स्थायी बंदोबस्त)

② कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना (1857 के विद्रोह के बाद ICS की भूमिका)

③ प्रशासनिक नियंत्रण एवं शासन।

④ औपनिवेशिक शासन को वैध ठहराना (सभ्यता मिशन)

⑤ साम्राज्य का सुदृढीकरण (पंजाब मे डलहौजी आयोग आदि)

⑥ ब्रिटिश शक्ति को मजबूत करना।

⑦ संकट प्रबंधन (बॉम्बे प्लेग)

⑧ विद्रोह का दमन (संथाल विद्रोह आदि)

⑨ प्रशासनिक प्रक्रियाओं का मानकीकरण (जनगणना, I.P.C.)

⑩ स्वतंत्र भारत की नौकरशाही नींव

आलोचना –

① नस्ली भेदभाव एवं विशिष्टतावाद।

② कॉवनेंटेड सेवाएँ

③ सांस्कृतिक असंवेदनशीलता एवं जनता से दूरी [1770 के बंगाल अकाल मे भी राजस्व-वसूली]

④ भ्रष्टाचार एवं भाई-भतीजावाद उदाहरण – जॉन मैकफर्सन

⑤ स्थानीय आवश्यकताओं से कटाव। (ब्रिटेन प्रशिक्षित अधिकारी)

⑥ भारतीयों के लिए अवसरों की कमी (जनरल डायर)

⑦ दमन का प्रमुख साधन।

⑧ स्थानीय संस्थानों को कमजोर करना।
° मद्रास मे कलेक्टरों ने लगभग 80% ग्राम पंचायतों का स्थान लिया।

⑨ लिटन द्वारा आयु सीमा घटाई – तिलक ने इसे "दमन का इस्पाती ढांचा" कहा।

सिविल सेवा सुधार –

① कॉर्नवालिस की भूमिका – वरिष्ठता आधारित पदोन्नति, अधिक वेतन, निजी व्यापार पर रोक।

② चार्टर अधिनियम, 1853 – खुली प्रतियोगी परीक्षा

③ आई.सी.एस. अधिनियम (1861) – उच्च पद कॉवनेंटेड सेवकों के लिए, कानूनी सुरक्षा।

④ एचिसन लोक सेवा समिति (1886) – भारतीय, प्रांतीय एवं अधीनस्थ सेवाओं का वर्गीकरण; आयु लगभग 23 वर्ष।

⑤ मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (1919) – भारत एवं इंग्लैंड मे एक साथ परीक्षा।

⑥ ली आयोग (1924) – लोक सेवा आयोग (PSC) की स्थापना की सिफारिश; भर्ती का कुछ अधिकार प्रांतीय सरकारों को; 15 वर्षों

मे ICS मे भारतीयो का 50:50 अनुपात।

7. भारत शासन अधिनियम, 1935: संघीय लोक सेवा आयोग (FPSC), प्रांतीय लोक सेवा आयोग (PPSC)

वर्तमान भारतीय नौकरशाही मे ब्रिटिश विरासत –

1. संरचनात्मक निरंतरता (IAS, IPS)
2. केन्द्रीकृत प्रशासन 3. लालफीताशाही, प्रतिक्रियात्मकता
4. योग्यता-आधारित भर्ती (प्रतियोगी परीक्षाएँ)
5. शासक बनाम प्रजा की मानसिकता।
6. कानून एवं प्रशासन की एकरूपता।
7. कानूनी एवं प्रशासनिक भाषा

औपनिवेशिक शासन के अधीन प्रेस:

1. राजनीतिक जागरूकता एवं प्रतिरोध का माध्यम
2. साम्राज्यवादी अन्याय को चुनौती देने वाली भारतीय आवाज़ों का मंच।
3. प्रेस स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता किसी राष्ट्र को जन्म देती है और उसका पोषण करती है।" (तिलक)

भारतीय प्रेस का विकास –

1. प्रारम्भिक शुरुआत: हिकी का बंगाल गजट (1780)
2. विकास एवं विनियमन: 1870 के दशक तक लगभग 140 समाचार पत्र, जिसमे 60 भाषाएँ भी।
3. सेंसरशिप अधिनियम (1799), लाइसेंसिंग अधिनि (1830)

भारतीय भाषाई प्रेस का उदय –

- स्वदेशमित्रन – तमिल
- संवाद कौमुदी – बंगाली,
- रास्त गोफ्तार – गुजराती

राष्ट्रवाद के साधन के रूप में प्रेस –

✓ मराठा व केसरी – लोकमान्य तिलक।

दमनकारी कानून –

- वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट, (1878)
- द न्यूजपेपर एक्ट (1908)

प्रेस पर सरकारी नियंत्रण –

1. सेंसरशिप ऑफ प्रेस एक्ट (1799): (लॉर्ड वेलेज़ली द्वारा लागू)
   - प्रकाशन से पहले सरकारी अनुमति आवश्यक।
2. लाइसेंसिंग रेगुलेशन (1823): जॉन एडम द्वारा, लाइसेंस अनिवार्य, उदाहरण – मिरात-उल-अखबार (राजा राममोहन राय)
3. (प्रेस एक्ट: 1835) – लाइसेंसिंग व्यवस्था (X)
   └ चार्ल्स मेटकाफ को भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता कहा जाता है।
4. रजिस्ट्रेशन एक्ट (1867):
   - मुद्रक, प्रकाशक का नाम देना अनिवार्य
   - प्रकाशन स्थल की जानकारी देना जरूरी
   - प्रत्येक प्रति सरकार को भेजनी होती थी
5. वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट (1878):
   - भारतीय भाषाओं के प्रेस पर नियंत्रण हुए
   - सरकार मुद्रक एवं प्रकाशक से जमानत मांग सकती थी।
   - उल्लंघन पर कार्यवाही, अपील का अधिकार नहीं।
   - 1882 मे लॉर्ड रिपन द्वारा समाप्त।
6. न्यूजपेपर एक्ट (1908) –
   - सरकार चेतावनी दे सकती थी।
   - प्रेस जब्त कर सकती थी, तथा उपकरण भी जब्त कर सकती थी।
   - 1921 मे तेज बहादुर सप्रू समिति की सिफारिश पर समाप्त।
7. इंडियन प्रेस एक्ट (1931):
   - सविनय अवज्ञा आंदोलन के बाद लागू।
   - सरकार को किसी भी ऐसे प्रकाशन को सेंसर करने की व्यापक शक्ति मिली थी। औपनिवेशिक शासन की वैधता पर प्रश्न उठता हो।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन मे प्रेस की भूमिका –

1. राष्ट्रीय चेतना का विकास (केसरी)
2. जनता को शिक्षित करना एवं संगठित करना
3. औपनिवेशिक अन्याय का पर्दाफाश (जैसे: बंगाल विभाजन, इल्बर्ट बिल)
4. सामाजिक सुधारो का समर्थन (हरिजन, संवाद कौमुदी)
5. सांस्कृतिक संरक्षण एवं पुनर्जागरण।
6. महिला सशक्तिकरण।

ब्रिटिशों द्वारा दमन के साधन के रूप में प्रेस :

1. औपनिवेशिक प्रशासन का साधन: (मद्रास कूरियर)
2. खुफिया जानकारी व निगरानी)
3. आर्थिक एवं व्यापारिक हितों की रक्षा: (कोलकाता गजट)
4. ब्रिटिश शासन को वैध ठहराना: (मद्रास कूरियर)

आलोचना —

1. सीमित पहुँच एवं अभिजात्य स्वरूप।
2. व्यवसायिकता एवं निष्पक्षता का अभाव (मुहम्मद अली के कॉमरेड के लेख)
3. ब्रिटिश हितों के प्रति झुकाव (सी॰ वाई॰ चिंतामणि के नेतृत्व में द लीडर)
4. सनसनीखेज़ी एवं अतिशयोक्ति (1921 का यूपी में लाठीचार्ज सम्बंधी लेख)

स्थानीय शासन की भूमिका व महत्व :

1. राजस्व संग्रह व भूमि प्रबंधन)
2. कानून एवं व्यवस्था
3. विवादों का समाधान
4. सूचना एकत्र करना
5. बाद में सुधारों की नींव
6. सार्वजनिक कार्य, स्वच्छता
7. राजनीतिक नेतृत्व के लिए मंच देना।

स्थानीय शासन की समस्याएँ —

1. स्वायत्ता का अभाव
2. नस्लीय भेदभाव
3. सीमित जनप्रतिनिधित्व
4. संसाधनों ↓
5. भ्रष्टाचार, शोषण।
6. शहरी पक्षपात
7. प्रशासनिक अक्षमता।
8. स्थानीय आवश्यकता की उपेक्षा।

स्थानीय शासन :

स्थानीय शासन का विकास : प्लासी के युद्ध के बाद गाँव के मुखिया एवं जमींदारों का नियंत्रण कमजोर हुआ।

1. **प्रारम्भिक प्रयास :** ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा मद्रास नगर निगम (1687) की स्थापना।
   - रेगुलेटिंग एक्ट (1773) के बाद कंपनी अधिकारियों व ब्रिटिश रेज़िडेंटों की भूमिका।
2. **लॉर्ड मेयो का प्रस्ताव (1870)** — विकेन्द्रीकरण प्रारम्भ
   - वित्तीय विकेन्द्रीकरण
   - जिला बोर्ड एवं नगरपालिका समिति स्थापना।
3. **लॉर्ड रिपन प्रस्ताव (1882)** — स्थायी स्वशासन
   - शहरी-ग्रामीण स्थानीय निकायों को बढ़ाया।
   - गैर-सरकारी सदस्यों को बहुमत।
   - सीमित मताधिकार। जिला बोर्ड की अध्यक्षता जिला अधिकारी के पास
4. **विकेन्द्रीकरण पर शाही आयोग (1908)** —
   - ग्राम पंचायतों को अधिक अधिकार, संसाधन।
   - उप-जिला बोर्डों का महत्व
   - कुछ कर संबंधी प्रतिबंध हटाए गए
   - नगरपालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा की जिम्मेदारी दी गयी।
5. **मई/1918 का प्रस्ताव :** स्थानीय निकायों को जनता का वास्तविक प्रतिनिधि बनाने पर बल।
6. **भारत शासन अधिनियम, 1935 :**
   - प्रांतीय स्वायत्ता में वृद्धि।
   - स्थानीय स्तर पर चुनावों से जनभागीदारी

03. जन-आधारित प्रतिरोध :

नागरिक, जनजातीय एवं किसान आंदोलन

सामान्य विशेषताएँ :

1. नेतृत्व - स्थानीय अभिजात वर्ग / करिश्माई (स्थानीय)
2. स्वतः स्फूर्त एवं स्थानीय स्तर पर प्रभाव
3. पारंपरिक युद्ध शैली एवं गुरिल्ला रणनीति
4. सामंत-विरोधी एवं औपनिवेशिक-विरोधी (पाइका)
5. सीमित समन्वय एवं भविष्य की योजना अभाव
6. पुनरुत्थानवादी प्रवृत्ति (बिरसा मुंडा - रामराज्य)
7. अंग्रेजों द्वारा कठोर दमन (रम्पा)

नागरिक विद्रोह :

कारण —
- शोषणकारी कर व्यवस्था (कच्छ विद्रोह)
- स्थानीय शासकों का विस्थापन (वेलु थम्पी)
- धार्मिक व सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप (संयासी विद्रोह)
- आर्थिक शोषण व उद्योगों का विनाश। उदा॰: सूरत नमक आंदोलन।
- भ्रष्ट एवं दमनकारी प्रशासन (संयासी)
- जनजातीय भूमि व स्वायत्ता पर नियंत्रण अतिक्रमण उदा॰: संथाल विद्रोह
- सैन्य असंतोष व भेदभाव (वेल्लोर-विद्रोह)

प्रभाव – ① जन - असंतोष उजागर हुआ (संन्यासी विद्रोह)
② औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती (पाइका)
③ राजनीतिक चेतना जागृत (विजयनगरम)
④ प्रशासनिक सुधार (रंगपुर विद्रोह)
⑤ भविष्य के प्रतिरोध आंदोलनों (1857) को प्रेरणा मिली।
⑥ अंग्रेजी दमन बढ़ा (वेल्लोर विद्रोह)
⑦ राष्ट्रवाद की नींव पड़ी (संथाल विद्रोह)

जनजातीय विद्रोह :

कारण – ① भूमि हड़पना एवं वन अधिकारों का हनन (कोल)
② साहूकारों द्वारा शोषण, ऋण बंधक उदा॰ संथाल हूल बनाम दिकू।
③ पारंपरिक जनजातीय अर्थव्यवस्था का विनाश (रम्पा)
④ जनजातीय स्वशासन ↓ (मुंडा उलगुलान)
⑤ धार्मिक - सांस्कृतिक हस्तक्षेप (ताना भगत)
⑥ जबरन श्रम व शारीरिक उत्पीड़न (भील)
⑦ औपनिवेशिक न्याय व्यवस्था की विफलता (संथाल)
⑧ पारिस्थितिक अव्यवस्था एवं आजीविका संकट (हो विद्रोह)

प्रभाव – ① कानूनी - संरक्षणात्मक सुधार (संथाल हूल)
② जनजातीय राजनीतिक चेतना ↑ (उलगुलान → झारखंड आंदोलन)
③ औपनिवेशिक विरोधी प्रतिरोध का विस्तार (कोल → 1857)
④ राष्ट्रवादी विचारों को बल मिला (नेहरू की डिस्कवरी ऑफ इंडिया)
⑤ प्रशासनिक पुनर्गठन (अनुसूचित जिला, अधिनि॰ 1874)
⑥ जनजातीय पहचान, संस्कृति संरक्षण। उदा॰ छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (1908)
⑦ अनुसूचित जनजातीय की सुरक्षा (5वीं एवं 6वीं अनुसूची PESA)
⑧ आधुनिक जनजातीय अधिकार आंदोलनों को प्रेरणा मिली।

उदाहरण : ① पहाड़िया विद्रोह, ② कोल ③ संथाल
*1857 के बाद विद्रोह → रामोसी, मुण्डा विद्रोह

किसान आंदोलन :

• **कारण** – ① शोषणकारी भू - राजस्व व्यवस्था। [(दक्कन दंगे (1875) - रैयतवाड़ी व्यवस्था विरोध]
② जमींदारों का अत्याचार एवं अवैध वसूली (पबना कृषक लीग (1873))
③ जबरन वाणिज्यिक फसलों की खेती (नील)
④ साहूकारों का शोषण एवं ऋण बंधक (दक्कन दंगे)
⑤ कृषि का व्यावसायीकरण (चंपारण)
⑥ अकाल एवं औपनिवेशिक उदासीनता।
⑦ पारंपरिक कृषक अधिकारों का ह्रास। (मापिला विद्रोह)
⑧ नस्लीय एवं कानूनी असमानता (नील-विद्रोह)

प्रभाव – ① कृषि शोषण उजागर हुआ (नील विद्रोह)
② कानूनी सुधार हुए (बंगाल टेनेंसी एक्ट)
③ राजनीतिक चेतना बढ़ी (किसान सभा आंदोलन, 1935)
④ किसानों का राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ाव।
⑤ औपनिवेशिक शासन की वैधता कमजोर ✓
⑥ भविष्य के कृषि सुधारों को प्रेरणा मिली। (1947 के बाद जमींदारी उन्मूलन)

उदाहरण : (1857 से पहले) : नर्केलबेरिया, रंगपुर (बंगाल)
(1857 के बाद) : नील विद्रोह, किसान सभा आंदोलन।

04. 1857 का विद्रोह :

• 10/मई/1857 : मेरठ में विद्रोह प्रारम्भ।
• 11/मई/1857 : बहादुर शाह जफ़र ने नेतृत्व स्वीकार किया।
• 30/मई/1857 : लखनऊ मे विद्रोह प्रारम्भ
• 14/सितम्बर/1857 – अंग्रेजों ने दिल्ली पर कब्ज़ा।
• 1/जून/1858 – रानी लक्ष्मीबाई एवं तात्या टोपे ने ग्वालियर पर कब्ज़ा।
• 17/जून/1858 – रानी लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुई।
• 1/नवम्बर/1858 – महारानी विक्टोरिया की घोषणा।

Understand UPSC

1857 की क्रान्ति :

कारण – (A) राजनीतिक : (1) ब्रिटिश विस्तारवादी नीति
(2) लैप्स सिद्धांत (3) अवध का विलय।

(B) प्रशासनिक – (1) भ्रष्ट व अक्षम नौकरशाही
(2) भारतीय शासकों एवं अधिकारियों का हाशियाकरण।
(3) अन्यायपूर्ण न्यायिक व्यवस्था।

(C) आर्थिक :
(1) शोषणकारी भूमि-राजस्व नीतियाँ
(2) धन का निकास
(3) उद्योगों का पतन.

(D) सामाजिक – धार्मिक –
(1) धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप।
(2) ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ
(3) नस्लीय भेदभाव (4) पश्चात्यीकरण।

(E) सैन्य –
(1) वेतन – सुविधाओं में भेदभाव
(2) भत्तों में कटौती (3) जाति खोने का भय

(F) तात्कालिक कारण –
(1) एनफील्ड राइफल के कारतूस।

प्रमुख नेता – (1) दिल्ली – बहादुर शाह ज़फ़र एवं बख्त खाँ
(2) लखनऊ – बेगम हज़रत महल।
(3) झाँसी – रानी लक्ष्मीबाई।
(4) कानपुर – नाना साहिब, तात्या टोपे।
(5) बरेली – खान बहादुर खाँ।

कमजोरियाँ – (1) सीमित क्षेत्रीय विस्तार
(2) संसाधनों ↓ (3) शिक्षित मध्य वर्ग की भागीदारी ↓
(4) समन्वय व संगठन ↓ (5) आधुनिक हथियार ↓
(6) भा. सैनिकों का अंग्रेजों को समर्थन।
(7) अंग्रेजों की मजबूत सैन्य शक्ति, सहायता
(8) जनसामान्य की सीमित समर्थन।

क्रान्ति की प्रकृति :

(1) सिपाही विद्रोह : [डॉ. आर. सी. मजूमदार]
"यह न पहला राष्ट्रीय आंदोलन था, न राष्ट्रीय न ही स्वतंत्रता का युद्ध।"

(2) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम –
- वीर विनायक दामोदर सावरकर
- पुस्तक : "द इण्डियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस"
- अंतरधार्मिक एकता
- सिपाहियों से आगे बढ़कर जनभागीदारी
- प्रेरणादायक आंदोलन.

(3) सामंती प्रतिक्रिया –
- मार्क्सवादी इतिहासकार : डी. एन. सा, पी.सी. जोशी।
- पदच्युत राजाओं, जमींदारों व सरदारों का विद्रोह
- उद्देश्य : पुराने विशेषाधिकारों की पुनर्स्थापना
- कारीगरों व किसानों की भागीदारी की उपेक्षा।

स्टेनली वोल्पर्ट : "यह केवल सिपाही विद्रोह से कहीं अधिक था, लेकिन प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से कम था।"

प्रभाव : (1) ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का अंत
(2) आक्रामक विलय नीति का अंत
(3) भारतीय सेना का पुनर्गठन।
(4) भारतीय सैनिकों का अनुपात घटाया (6:1 → 2:1)
(5) धर्म में हस्तक्षेप न करने की नीति।
(6) आधारभूत संरचना का विकास।

05 सामाजिक – धार्मिक सुधार आंदोलन :

उद्देश्य : (1) सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन (राजा राममोहन राय – सती प्रथा)
(2) शिक्षा प्रसार [सावित्रीबाई फुले]
(3) महिला सशक्तिकरण [ईश्वरचन्द्र विद्यासागर – विधवा पुनर्विवाह]
(4) तर्कवाद व वैज्ञानिक सोच विकास [द. सरस्वती]
(5) धार्मिक सहिष्णुता एवं एकता (ब्रह्म समाज)
(6) जातीय भेदभाव का विरोध (सत्यशोधक समाज)
(7) धार्मिक मूल्यों का पुनरुद्धार व सुधार (आर्यसमाज)
(8) औपनिवेशिक हस्तक्षेप का विरोध (राजा राममोहन राय)

जागृति के साधन :
(1) शिक्षा व साक्षरता अभियान (हिंदू कॉलेज)
(2) लेखन व प्रकाशन [संवाद कौमुदी]
(3) सुधार आन्दोलन व संस्थाओं की स्थापना (ब्रह्म समाज)
(4) कानूनी सुधार, जनजागरण (ईश्वरचंद्र विद्यासागर)
(5) सार्वजनिक बहस, व्याख्यान
(6) सामाजिक सेवा, प्रत्यक्ष कार्य (पंडिता रमाबाई)
(7) धार्मिक ग्रंथों की नई व्याख्या (स्वामी विवेकानंद)

प्रश्न: क्या सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन भारतीय पुनर्जागरण था?

1. भारतीय विरासत का पुनर्जीवन।
2. तर्कवाद एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण।
3. आधुनिक शिक्षा का प्रसार।
4. राष्ट्रीय चेतना का विकास।
5. भारतीय एवं पश्चात्य विचारों का समन्वय।

प्रमुख सुधार आंदोलन :

1. राजा राममोहन राय → (ब्रह्म समाज - 1828)
   - भारतीय पुनर्जागरण के जनक
   - वेदांत कॉलेज की स्थापना • 1829 सती प्रथा पर प्रतिबंध।
2. यंग बंगाल आंदोलन [1820-30 दशक]
   - हेनरी लुई विवियन डेरोजियो
   - शिक्षा, विचार व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
   - रैयतों की सुरक्षा, न्यायपूर्ण व्यवहार।
3. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर [1820-91]
   - विधवा पुनर्विवाह का समर्थन
   - बहुविवाह का विरोध • बेथ्यून स्कूल
4. स्वामी विवेकानंद :
   - परमार्थ से व्यवहार की ओर • वेदांत प्रचार
   - रामकृष्ण मठ व मिशन की स्थापना।
5. ज्योतिराव फुले :
   - सत्यशोधक समाज • गुलामगिरि • सार्वजनिक सत्य धर्म।
6. सावित्रीबाई फुले :
   - सेवा मंडल • नाइयों की हड़ताल का समर्थन
7. ताराबाई शिंदे : • स्त्री-पुरुष तुलना।
8. थियोसोफिकल आंदोलन :
   - मैडम एच • पी• ब्लावात्स्की
   - कर्नल एम. एस. ओलकॉट.
9. आर्य समाज : दयानंद सरस्वती
   - वेदों को सर्वोच्च व त्रुटिहीन माना
   - हिंदू धर्म का आधुनिकीकरण
   - सत्यार्थ प्रकाश • शुद्धि आन्दोलन।
10. एस. एन• डी• पी- आन्दोलन (एझावा समुदाय)
    - समानता व सामाजिक न्याय पर बल।
11. आत्म - सम्मान आन्दोलन : (ई. वी. रामास्वामी नायकर)
    - समानतावादी आंदोलन
    - ब्राह्मण पुजारी के बिना विवाह.
12. मन्दिर प्रवेश आंदोलन : टी• के• माधव.
    - वैकोम सत्याग्रह - के• पी• केशव मेनन
13. मुस्लिम आंदोलन :
    - वहाबी / वलीउल्लाह आंदोलन - सैय्यद अहमद बरेलवी।
    - अहमदिया आंदोलन - मिर्जा गुलाम अहमद
    - अलीगढ़ आंदोलन - सर सैय्यद अहमद खां।
14. पारसी आंदोलन :
    - रहनुमाई मजदयासन सभा (1851)
    - दादाभाई नौरोजी, फरदुनजी, के• आर कामा
15. सिख आन्दोलन :
    - अकाली आंदोलन (गुरुद्वारा सुधार आंदोलन)

प्रश्न: सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन मुख्यतः बंगाल व महाराष्ट्र तक ही सीमित क्यों रहे?

1. पश्चिमी शिक्षा तक प्रारंभिक पहुंच (हिंदू कॉलेज)
2. शिक्षित मध्यम वर्ग का विकास (राजा राममोहन राय)
3. सक्रिय सुधारवादी नेता (ज्योतिबा फुले)
4. मुद्रण माध्यम व सार्वजनिक बहस (लोकहितवादी - जी• एच • देशमुख)
5. शहरी एवं सांस्कृतिक केन्द्र (रामकृष्ण मिशन)
6. अन्य क्षेत्रों में रूढ़िवादी प्रतिरोध।

आलोचनात्मक विश्लेषण :

1. अभिजात्य प्रकृति [यंग बंगाल आंदोलन)
2. सीमित जन - आधार
3. जातिगत पक्षपात (दयानंद सरस्वती ने अस्पृश्यता का विरोध, पर वर्णव्यवस्था का समर्थन)
4. लैंगिक असमानता बनी रही।
5. क्षेत्रीय असंतुलन (बंगाल, महाराष्ट्र)
6. धार्मिक ध्रुवीकरण (शुद्धि आंदोलन, अलीगढ़ आंदोलन)
7. आर्थिक समस्याओं की उपेक्षा।

विभिन्न प्रतिक्रियाएं :

- प्रतिक्रियावादी तत्व : ① कड़ा विरोध ② एंटी-हिन्दू ③ धर्म सभा
- शिक्षित भारतीय - ① अधिकांश ने समर्थन किया
  ② राष्ट्रीय प्रगति व आधुनिकीकरण।
  ③ गोपाल कृष्ण गोखले।
- ब्रिटिश प्रतिक्रिया -
  ① कुछ सामाजिक सुधारों का चयनात्मक समर्थन (सती प्रथा उन्मूलन अधिनियम 1829)
  ② पश्चिमी शिक्षा को बढ़ावा (मैकॉले मिनट)
  ③ 1857 के बाद धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करना।
  ④ सुधार आंदोलनों पर संदेह
  ⑤ फूट डालो व राज करो (सर सैय्यद अहमद खां)

प्रबोधन की प्रतिध्वनि - भारत पर प्रभाव -

(1) सामाजिक परिवर्तन (2) महिला सशक्तिकरण (3) जातीय समानता (4) सामाजिक न्याय (5) विश्व पर प्रभाव (6) आधुनिकीकरण, शिक्षा (7) वैश्विक पहचान (8) सामाजिक रूप से प्रासंगिक साहित्य का सृजन (9) अंतर धार्मिक संवाद (10) भारतीय प्रवासी समुदाय पर प्रभाव।

आधुनिक भारत की जननियाँ : सामाजिक परिवर्तन के केन्द्र में महिलाएँ :

(A) सती प्रथा उन्मूलन : (1) राजा राममोहन राय, (2) बंगाल विनियमन XVII, 1829.

(B) कन्या भ्रूण हत्या : राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती, बंगाल विनियमन 1795, 1804.

(C) विधवा पुनर्विवाह : (1) हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856)
(2) विधवा गृह - डी. के. कर्वे
(3) सत्यप्रकाश - करसनदास मुलजी

(D) बाल विवाह : बी. एम. मालाबारी, रुखमाबाई राउत
रुखमाबाई मामला, सहमति आयु अधिनि. (1891)

(E) महिला शिक्षा :
- बेथ्यून स्कूल (1849) - जे. ई. डी. बेथ्यून
- बालिका विद्यालय, विधवा शिक्षा - फुले दंपति
- भारतीय महिला विश्वविद्यालय - डी. के. कर्वे

(F) महिला संगठन :
- लेडीज़ सोशल कॉन्फ्रेंस - रमाबाई रानाडे
- भारत स्त्री महामंडल - सरला देवी चौधरानी
- ऑल इंडिया विमेंस कॉन्फ्रेंस - मार्गरेट कज़िन्स

सुधार आंदोलन और जाति व्यवस्था :

- आलोचना - दयानंद सरस्वती (आर्य समाज)
- निम्न जातियों का उत्थान :
  - ज्योतिबा फुले (माली) - सत्यशोधक समाज
  - स्वामी विवेकानंद - दरिद्र नारायण।

उच्च जातियों की भूमिका - राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, के. सी. सेन।

भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण में सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन की भूमिका -

(1) आधुनिक विचारों का प्रसार [स्वतंत्रता, समानता, न्याय] - राजा राममोहन राय [तुहफ़त - उल - मुवाहिद्दीन]
(2) राष्ट्रीय चेतना निर्माण (स्वामी विवेकानंद)
(3) सामाजिक विभाजनों को चुनौती - ज्योतिबा फुले (सत्यशोधक सत्य धर्म)
(4) शिक्षित मध्य वर्ग उदय - दादाभाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले।
(5) राष्ट्रवाद में महिलाओं की भूमिका - ईश्वरचंद्र विद्यासागर, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ़ अली
(6) ब्रिटिश सर्वोच्चता को चुनौती -
- दयानंद सरस्वती - "वेदों की ओर लौटो"
- गणेश उत्सव - बाल गंगाधर तिलक.

(7) सुधार - आधारित संगठनों का निर्माण.
- आर्य समाज - आत्मनिर्भरता, स्वदेशी आदि

(8) कर्तव्य एवं बंधुत्व की भावना को बढ़ावा
- स्वामी विवेकानंद - "शिव ज्ञाने जीव सेवा"

(A) महत्वपूर्ण प्रसंग -

(1) ईश्वरचंद्र विद्यासागर - "मैं इन ईंटों से विद्यालय बना सकता हूँ"
(2) सावित्रीबाई फुले के पहले शिक्षण दिवस का कथन - "मैं अपना कर्तव्य कर रही हूँ, आप अपना कीजिए।"
(3) राजा राममोहन राय - सती प्रथा उन्मूलन।

06. भारत में राष्ट्रवाद का उदय

(1) भारत में विभिन्न नेताओं ने प्रारम्भ में राष्ट्रवाद को किस प्रकार देखा?

(1) दादाभाई नौरोजी - आर्थिक शोषण को उजागर किया : उदारवादी दृष्टिकोण।
(2) बाल गंगाधर तिलक - आक्रामक, भावनात्मक तथा भारतीय परंपराओं पर आधारित राष्ट्रवाद।

(3) लाला लाजपत राय - ब्रिटिश शासन का कड़ा विरोध एवं प्रत्यक्ष कार्रवाई के समर्थन।

(4) राजा राममोहन राय - आधुनिकीकरण एवं सुधारवादी राष्ट्रवाद।

(5) स्वामी विवेकानंद - सांस्कृतिक राष्ट्रवाद।

(6) रवीन्द्रनाथ टैगोर - सार्वभौमिक मानवतावाद

(7) श्री अरविंद - राष्ट्रवाद को आध्यात्मिक शक्ति के रूप में देखा।

(2) राष्ट्रवाद के विकास कारण :-

1. मध्यम वर्ग का उदय - सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
2. सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन - ब्रह्म समाज
3. ब्रिटिश आर्थिक शोषण - धन निकासी सिद्धांत।
4. नस्लीय भेदभाव एवं अन्याय - इल्बर्ट बिल विवाद।
5. पाश्चात्य शिक्षा व नए विचार - राजा राममोहन राय।
6. संचार एवं प्रेस का विकास - केसरी, मराठा समाचार पत्र
7. राजनीतिक संगठनों एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन → नेताओं को मंच
8. वैश्विक प्रभाव - अमेरिका व फ्रांसीसी क्रान्ति।
9. भारतीय भाषाओं के साहित्य का विकास - आनंदमठ

(3) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) से पहले के राजनीतिक संगठन :- (A) बंगाल

1. बंगभाषा प्रकाशिका सभा (1836)
2. लैंडहोल्डर्स सोसाइटी (जमींदार सभा) - (1838)
3. बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी (1843)
4. ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन (1851)
5. इंडियन लीग - शिशिर कुमार घोष (1875)
6. इंडियन एसोसिएशन (1876) - ए० एम० बोस, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी।

(B) बम्बई - 1. बम्बई एसोसिएशन (1852)
2. पूना सार्वजनिक सभा (1870)
3. बम्बई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन (1885)

(C) मद्रास - 1. मद्रास नेटिव एसोसिएशन (1852) - पी. एल. चेट्टी
2. मद्रास महाजन सभा (1884)

(4) प्रमुख विशेषताएँ -

1. पूर्ण स्वतंत्रता की माँग नहीं की, बल्कि भारतीयों के हितों के विरुद्ध ब्रिटिश नीतियों का विरोध किया।
2. मुख्य प्रशासनिक एवं आर्थिक मुद्दे :-
   - कपास के आयात पर अनुकूल शुल्क नीति
   - सरकारी सेवाओं का भारतीयकरण।
   - अफ़गान नीति विरोध
   - वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट तथा प्रेस पर सरकारी नियंत्रण विरोध।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC, 1885) :-

संस्थापक = ए० ओ० ह्यूम
प्रथम अध्यक्ष = डब्ल्यू. सी. बनर्जी

• उद्देश्य एवं लक्ष्य :

1. विभिन्न वर्गों के बीच मित्रता को (P)
2. पूर्वाग्रहों को समाप्त करना।
3. राष्ट्रीय एकता भावना को सुदृढ़ करना।
4. शिक्षित भारतीयों के विचारों को व्यक्त
5. जनहित के भविष्य की कार्ययोजना की रूपरेखा तैयार करना।

• कांग्रेस स्थापना संबंधित सिद्धांत :

1. आधिकारिक षड्यंत्र सिद्धांत - लाला लाजपत राय
2. भारतीय अभिजात वर्ग की महत्वकांक्षा एवं प्रतिद्वंद्विता का सिद्धांत - अनिल सील
3. अखिल भारतीय संगठन की आवश्यकता का सिद्धांत
4. लाइटनिंग कंडक्टर सिद्धांत - विपिन चन्द्रा

कांग्रेस से पहले का राष्ट्रवाद बनाम कांग्रेस के बाद का राष्ट्रवाद :

कांग्रेस से पहले :

1. क्षेत्रीय, बिखरा, असंगठित।
2. अभिजात वर्ग एवं समाज सुधारकों तक सीमित।
3. व्यक्तिगत नेताओं एवं स्थानीय सुधारकों के नेतृत्व में।
4. प्रार्थना, याचिका एवं विरोध
5. सामाजिक सुधार व स्थानीय शिकायतों के निवारण पर बल।

कांग्रेस के बाद :

1. अखिल भारतीय, एकीकृत व संगठित
2. समाज के व्यापक वर्गों की भागीदारी
3. शिक्षित अभिजात वर्ग एवं राष्ट्रीय नेताओं का नेतृत्व।
4. संगठित माँगें, प्रस्ताव व जन आंदोलन
5. राजनीतिक अधिकार, स्वशासन व पूर्ण स्वराज की माँग।

प्रारम्भिक चरण में काँग्रेस की समस्याएँ :-

1. क्षेत्रीय विविधता
2. वैचारिक मतभेद
3. जाति व धर्म के आधार पर विभाजन।
4. ब्रिटिश सरकार का संदेह
5. सीमित जनाधार।
6. दमन का भय
7. उदारवादियों पर जनता का अविश्वास।
8. विदेशी नेतृत्व को लेकर संदेह।
9. पुराने व अप्रभावी तरीके।

प्रारंभिक काँग्रेस चरण – उदारवादी चरण :-

उदारवादियों की मान्यताएँ व विचार :-

1. ब्रिटिश न्यायप्रियता पर विश्वास।
2. संवैधानिक तरीके का समर्थन
3. क्रमिक सुधार एवं संवैधानिकता।
4. ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन (दादाभाई नौरोजी 1896 – उपनिवेशों जैसा स्वराज
5. ब्रिटिश शासन की आर्थिक आलोचना (धन-निकासी सिद्धांत – ड्रेन सिद्धांत)
6. ब्रिटिश शासन को ईश्वर की इच्छा मानना।

उदारवादियों की प्रमुख माँगे :-

1. प्रतिनिधित्व के बिना कर नहीं।
2. स्वराज माँग
3. भारतीय सिविल सेवा का भारतीयकरण।
4. ICS परीक्षा का भारत, इंग्लैण्ड मे आयोजन।
5. ब्रिटिश विदेश नीति का विरोध।
6. स्वदेशी को लोकप्रिय बनाना।
7. आयातित वस्तुओं पर शुल्क समाप्त करने का विरोध।
8. कपास पर उत्पाद शुल्क लगाने का विरोध
9. न्यायपालिका, कार्यपालिका का पृथक्करण।
10. शस्त्र अधिनियम को समाप्त करना।
11. सैन्य व्यय मे कमी।

प्रमुख नेता : (1) दादाभाई नौरोजी, (2) गोपाल कृष्ण गोखले (3) आर. सी. दत्त (4) महादेव गोविंद रानाडे (5) डब्ल्यू. सी. बनर्जी (6) फिरोजशाह मेहता (7) सुरेन्द्रनाथ बनर्जी (8) बदरूद्दीन तैयबजी।

उदारवादियों की रणनीतियाँ :

1. याचिकाएँ और ज्ञापन : 1886 में काँग्रेस में भारतीय प्रतिनिधित्व बढ़ाने की माँग।
2. सार्वजनिक सभाएँ और बहसें :- इल्बर्ट बिल को कमजोर करने का विरोध।
3. काँग्रेस अधिवेशनों मे प्रस्ताव : 1892 में 1892 ICS परीक्षा (भारत) में आयोजित की माँग।
4. प्रेस का उपयोग : 'द हिन्दू' का प्रभावी प्रयोग
5. ब्रिटेन में लॉबिंग -
6. जनता को शिक्षित करना – गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी की स्थापना।

उदारवादियों की उपलब्धियाँ –

1. ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की आलोचना (ड्रेन थ्योरी)
2. विधायी परिषदों का विस्तार (भारतीय परिषद अधिनियम 1892)
3. राजनीतिक चेतना का विकास।
4. भविष्य के नेताओं को प्रशिक्षित किया
5. अखिल भारतीय संगठन व राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया।
6. भविष्य के स्वतंत्रता संघर्ष की मजबूत नींव।

उदारवादियों ने भविष्य के संघर्ष की नींव किस प्रकार तैयार की ?

1. राजनीतिक शिक्षा एवं राष्ट्रीय जागरूकता (↑)
2. ब्रिटिश शासन की आर्थिक आलोचना
3. संवैधानिक सुधारों की माँग।
4. अखिल भारतीय संगठन व राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया।
5. धर्मनिरपेक्ष व उदारवादी मूल्यों प्रसार।
6. नागरिक समाज के विकास में योगदान।
7. भविष्य के नेताओं के लिए प्रशिक्षण का आधार तैयार किया।

उदारवादी जनता को प्रभावित करने में क्यों असफल रहे ?

1. ठोस उपलब्धियों का अभाव :- भारतीय परिषद अधिनियम, 1892 केवल प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व प्रदान कर सका।

② ब्रिटिश उदारता पर अत्याधिक विश्वास – ब्रिटिश सरकार की उदासीनता व बार² पड़ने वाले अकालो ने विश्वास कमज़ोर कर दिया।

③ जन-आधार सीमित था।

④ आर्थिक आलोचना से जागरूकता तो बढ़ी, लेकिन प्रत्यक्ष कार्यवाही / राहत नहीं मिली।

⑤ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का उभार – बाल गंगाधर तिलक व बंगाल विभाजन के बाद इसका प्रभाव बढ़ा।

⑥ जनता की तत्काल समस्याओं का समाधान नहीं: जनशिक्षा, भूमि-राजस्व में राहत व सेवाओं के भारतीयकरण जैसे मुद्दे उपेक्षित प्रगति नहीं।

⑦ ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियाँ: राजद्रोह अधिनियम (1870), तथा बंगाल विभाजन (1905)

विपिन चंद्र का मूल्यांकन:

① प्रारम्भिक राष्ट्रवादी नेता भी थे और सीखने वाले भी, उन्हें साम्राज्यवाद की प्रकृति की पूरी समझ नहीं थी।

② जन-आंदोलन जैसी रणनीतियाँ तभी सफल हो सकती है जब जनता संगठित, एकजुट व समान राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित हो।

"1885 से 1905 का काल भारतीय राष्ट्रवाद का बीज बोने का समय था: प्रारम्भिक राष्ट्रवादियों ने इस बीजों को बहुत गहराई से बोया।" – (विपिन चन्द्र).

7. उग्रवादियों / चरमपंथियों के अधीन कांग्रेस

उग्रवादियों के उदय के कारण

1. उदारवादी राजनीति की विफलता
2. आ० शोषण व अकाल संकट
3. शिक्षा का विकास
4. वैश्विक क्रांतियों से प्रेरणा → आयरिश होमरूल
5. लॉर्ड कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियाँ
   - (i) बंगाल विभाजन
   - (ii) भारतीय विश्वविद्यालय अधि० 1904
   - (iii) कलकत्ता निगम अधि० 1899
   - (iv) दिल्ली दरबार का आयोजन
   - (v) भारतीय आधिकारिक रहस्य अधि० 1904
6. भारत में बढ़ती अशांति → बंगाल में अनुशीलन समिति व महाराष्ट्र में अभिनव भारत

विचार:
- स्वराज एक अधिकार
- ब्रिटिश इरादों पर अविश्वास
- सांस्कृतिक राष्ट्रवाद
- जन लामबंदी में विश्वास
- आत्मनिर्भरता
- राजनीतिक राष्ट्रवाद

रणनीतियाँ

1. ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार
2. स्वदेशी का प्रचार
3. राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा देना
4. जन लामबंदी
5. निष्क्रिय प्रतिरोध
6. वर्नाक्यूलर प्रेस एवं साहित्य का उपयोग
7. सड़क पर विरोध प्रदर्शन व हड़तालें
8. स्वयंसेवकों का दल → स्वदेश बांधव समिति

स्वदेशी आंदोलन

स्वदेशी आंदोलन भारत में आधुनिक जन राष्ट्रवादी आंदोलन की वास्तविक शुरुआत थी (बिपिन चंद्रा)

- 1903 → बंगाल विभाजन का प्रस्ताव
- जुलाई 1905 → विभाजन की आधिकारिक घोषणा।
- अगस्त 1905 → स्वदेशी आंदोलन प्रारंभ
- अक्टूबर 1905 → विभाजन लागू
- दिसंबर 1906 → कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस ने स्वराज को लक्ष्य घोषित किया
- 1907 → सूरत विभाजित
- 1909 → मॉर्ले मिंटो सुधार
- 1911 → विभाजन रद्द

कारण

1. बंगाल विभाजन की घोषणा
2. बढ़ती राष्ट्रवादी भावना।
3. कर्जन की नीतियाँ → कलकत्ता निगम अधि० 1899
4. अंग्रेजों द्वारा आ० शोषण → भारत का औद्योगिकरण
5. वैश्विक आंदोलन से प्रेरणा → इथियोपिया की इटली पर विजय, बोअर युद्ध
   (इथियोपिया की ... का पतन)

विशेषताएँ

1. विदेशी वस्तुओं का व्यापक बहिष्कार
2. विदेशी सामान बेचने वाली दुकानों पर धरना
3. स्वदेशी का प्रचार व उपयोग
4. राष्ट्रीय शिक्षा पर जोर
5. स्वयंसेवी वाहिनी या समितियों का गठन
6. पारंपरिक त्योहारों एवं सांस्कृतिक माध्यमों का उपयोग

स्वदेशी आंदोलन पर ब्रिटिश प्रतिक्रिया

1. उग्रवादी नेतृत्व का दमन
2. नरमपंथियों को संतुष्ट करने के लिए मॉर्ले मिंटो सुधार

महत्व

1. पूर्ण अव्यावहारिकता का सिद्धांत
2. राष्ट्रीय स्तर पर पहला व सफल जन आंदोलन
3. बड़ी संख्या में महिला भागीदारी → सरला देवी चौधरानी
4. आक्रामक व सीधी कार्रवाई
5. आ० व सांस्कृतिक आंदोलन → ए. आर. देसाई
6. आत्मनिर्भरता / ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार

सीमाएँ

1. सीमित पहुँच → ग्रामीण क्षेत्रों से समर्थन नहीं
2. आ० चुनौतियाँ
3. आंतरिक विभाजन
4. दमन
5. नेतृत्वहीन → प्रमुख नेताओं की गिरफ्तारी

उदारवादी	उग्रवादी
1. संवैधानिक व क्रमिक सुधार	1. मुखर व तत्काल सुधार
2. साम्राज्य के भीतर स्वशासन	2. पूर्ण स्वराज
3. याचिकाएँ, संकल्प	3. बहिष्कार, निष्क्रिय प्रतिरोध
4. ब्रिटिश उदारवाद पर विश्वास	4. व्यापक जनसमर्थन
5. शिक्षित मध्यम वर्ग	5. तिलक (लाल-बाल-पाल)
6. नौरोजी, गोखले	6. वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट
7. अंग्रेजी प्रेस	7. कठोर दमन
8. मॉर्ले मिंटो सुधार पारित	

सूरत विभाजन

कारण

① नरम दल व गरम दल का विभाजन
② अगले कांग्रेस अध्यक्ष के नाम पर मतभेद
↳ उग्रवादी स्वदेशी आंदोलन को संपूर्ण भारत में विस्तारित करना चाहते थे
③ उग्रवादियों को पार्टी से निष्कासित किया गया

8. क्रांतिकारी गतिविधियों का उद्भव – चरण I (1907–17)

कारण

① उदारवादी राजनीति से मोहभंग → बंगाल विभाजन (1905)
② बंगाल विभाजन (1905) → फूट डालो राज करो
↳ अनुशीलन समिति, खुदीराम बोस
③ मुखर राष्ट्रवाद का विकास (लाल-बाल-पाल)
④ भारतीय संस्कृति एवं ऐतिहासिक गौरव का प्रभाव → गणपति व शिवाजी उत्सव
⑤ दमनकारी ब्रिटिश नीतियाँ → राजद्रोह अधि०
⑥ अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव → इथियोपिया द्वारा इटली पर विजय, जापान द्वारा रूस पर विजय
⑦ आ० शोषण व व्यापक गरीबी → प्रथम विश्वयुद्ध
⑧ युवा भागीदारी व छात्र आंदोलन → जतिन दास
⑨ कांग्रेस में दरार → नरमपंथी व गरमपंथी

क्रांतिकारियों की प्रमुख रणनीतियाँ

① गुप्त समितियों का गठन → अनुशीलन समिति
② हिंसा व सशस्त्र संघर्ष का प्रयोग
↳ अलीपुर बम केस (1908) → खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी
③ ब्रिटिश अधिकारियों व सत्ता के प्रतीकों को निशाना बनाना → अनंत लक्ष्मण कान्हेरे द्वारा नासिक में मजिस्ट्रेट जैक्सन की हत्या
④ सांस्कृतिक पुनरुत्थान से प्रेरित राष्ट्रवाद
↳ गणपति व शिवाजी उत्सव
⑤ अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलनों का प्रभाव
↳ सावरकर ने 1857 को भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम
⑥ बलिदान का महिमामंडन → खुदीराम बोस (1908)

महत्व

① मनोवैज्ञानिक प्रभाव → अंग्रेजों की अजेयता।
② राष्ट्रीय जागृति → युगांतर व वंदे मातरम्
③ अंतर्राष्ट्रीय समर्थन व मान्यता → गदर आं०
④ सशस्त्र संघर्ष में योगदान → INA में रासबिहारी बोस की भूमिका।
⑤ भविष्य के नेताओं को तैयार करना।
↳ सावरकर, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस
⑥ ब्रिटिश दमन का पर्दाफाश
↳ अलीपुर षड्यंत्र केस व काकोरी मुकदमा
⑦ मुख्यधारा की राजनीति को प्रभावित करना।
↳ असहयोग आं०

कमियाँ

① जन समर्थन का अभाव (युगांतर)
② क्षेत्रीय व पृथक प्रकृति (गदर आं०)
③ अपर्याप्त योजना एवं संसाधन
↳ मुजफ्फरपुर बम कांड (1908)
④ कठोर ब्रिटिश दमन → अलीपुर षड्यंत्र
⑤ सीमित वैचारिक स्पष्टता → मित्र मेला
⑥ अन्य समुदायों का अलगाव
⑦ तत्काल लक्ष्य प्राप्त करने में विफलता

क्रांतिकारी गतिविधियाँ

बंगाल

① अनुशीलन समिति, युगांतर
② बारीन्द्रनाथ बसु, बारींद्र घोष, रासबिहारी बोस
③ 1907 → गवर्नर फ्रेजर की ट्रेन को पटरी से उतारने का प्रयास
④ 1908 → जज किंग्सफोर्ड पर हमला (खुदीराम बोस)
⑤ 1908 → पुलिन दास द्वारा बर्रा डकैती
⑥ बारीन्द्र, संध्या व युगांतर पत्र

महाराष्ट्र

① रामोसी किसान सेना (1879) → वासुदेव बलवंत फडके
② चापेकर बंधुओं ने → रैंड व आयर्स्ट की हत्या
③ सावरकर व उनके भाई ने मित्र मेला की स्थापना
④ नासिक, पूना व बंबई में बम बनाना।

पंजाब

① लाला लाजपत राय → पंजाबी पत्रिका
② अजीत सिंह → अंजुमन-ए-मोहिसबान-ए-वतन
③ रासबिहारी बोस → गदर क्रांति का नेतृत्व व INA की स्थापना

विदेश

① श्यामजी कृष्णवर्मा → लंदन में इंडिया हाउस, द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट पत्रिका
② मदनलाल ढींगरा → कर्जन-विली की हत्या
③ भारतीय स्वतंत्रता के लिए बर्लिन समिति की स्थापना → वीरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय, लाला हरदयाल

गदर आंदोलन → 1913
↳ सैन फ्रांसिस्को – गदर पार्टी – 'गदर' अखबार

कोमागाटा मारू हादसा
↳ 370 यात्री → सिंगापुर से वैंकूवर → 22 मृत्यु

1909 का भारतीय परिषद अधि० (मार्ले मिंटो सुधार)

प्रथम विश्व युद्ध व भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

प्रभाव
① बढ़ती आ० कठिनाइयाँ → मुद्रास्फीति, हड़तालें
② जबरन भर्ती व ग्रामीण अशांति → 1.3 M + सैनिक भर्ती
③ रा० उम्मीदों के साथ विश्वासघात → मोंटाग्यु चेम्सफोर्ड सुधार (1919)
④ महात्मा गांधी व सत्याग्रह आंदोलनों का उदय
↳ चंपारण सत्याग्रह 1917, खेड़ा सत्याग्रह 1918
⑤ जलियांवाला बाग नरसंहार → नरसंहार
⑥ खिलाफत आंदोलन व हिंदू-मुस्लिम एकता
↳ असहयोग आंदोलन (1920-22)
⑦ सामूहिक राष्ट्रवाद की ओर बदलाव
⑧ क्रांतिकारी एवं वामपंथी विचारधारा का उदय
↳ HSRA का गठन
⑨ औद्योगिक श्रम का विकास → बॉम्बे कपड़ा मिलें

प्रथम विश्व युद्ध पर भारतीय समूहों की प्रतिक्रिया
① उदारवादी → रा० रियायतों की आशा
② उग्रवादी → युद्ध समर्थन – होमरूल के माध्यम से राष्ट्रवादी मांगों को पुनर्जीवित
③ क्रांतिकारी → गदर आंदो० – सशस्त्र विद्रोह योजना
④ शहरी मध्यम वर्ग → ब्रिटिश उद्देश्य का समर्थन

होम रूल आंदोलन

तिलक	एनी बेसेंट
① अप्रैल 1916	① सितंबर 1916
② MH (मुंबई x), KR, मध्य प्रांत व बरार	② मद्रास, शेष भारत (मुंबई ✓)
③ एन.सी. केलकर, K.M. मुंशी, A.R. जयकर	③ G.S. अरुंडेल, B.P. वाडिया, C.P. रामास्वामी अय्यर
④ पतन → तिलक इंग्लैण्ड चले गए।	④ 1917 में बेसेंट को नजरबंद कर दिया

सफलताएं
① राष्ट्रवादी भावना पुनर्जीवित की
② रा० जागरूकता का प्रसार
③ अखिल भारतीय पहुंच
④ जन आंदोलनों के लिए जमीन तैयार की
⑤ नरमपंथियों व चरमपंथियों के बीच एकता
⑥ सरकारी प्रतिक्रिया हेतु दबाव

पतन
① सीमित जन आधार
② स्वतंत्रता का कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं
③ नेतृत्व के मुद्दे
④ अल्पकालिक गति
⑤ आंतरिक प्रभाव

कांग्रेस का पुनः एकीकरण
→ सूरत विभाजन (1907)
→ 1916 के लखनऊ अधिवेशन

लखनऊ समझौता – 1916

पृष्ठभूमि
① प्रथम विश्व युद्ध ② हिंदू–मुसलमान के बीच एकता
③ कांग्रेस व मुस्लिम लीग अलग अलग काम

प्रमुख प्रावधान
① कांग्रेस + ML → रा० मांग पर एक साथ
② स्वशासन की मांग
③ कांग्रेस ने मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचिका स्वीकार कर ली।

महत्व
① हिंदू-मुस्लिम एकता
② कांग्रेस का पुनः एकीकरण
③ स्वशासन की सामान्य मांग
④ राष्ट्रीय आंदोलन का सशक्तिकरण
⑤ अंग्रेजों पर दबाव

आलोचना
① साम्प्रदायिक रा० को बढ़ावा
② अल्पकालिक एकता, दीर्घकालिक विभाजन
③ धर्मनिरपेक्षता को कमजोर किया गया
④ कुछ क्षेत्रों में अति प्रतिनिधित्व
⑤ विभाजन की रा० का भविष्य का आधार

भारत सरकार अधि० 1919
① पृथक निर्वाचिका → सिखों, ईसाईयों, एंग्लोइंडियन
② भारत के राज्य सचिव को ब्रिटिश राजस्व वेतन
③ प्रांत में द्वैध शासन → स्थानांतरित – आरक्षित विषय
④ केंद्र में द्विसदनीय विधायिका
⑤ ICS परीक्षा भारत में आयोजित
⑥ महिलाओं को वोट देने का अधिकार मिला

9. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का गांधीवादी चरण

द० अफ्रीका में प्रमुख घटनाएँ

① प्रारंभिक संघर्ष → पीटरमैरित्जबर्ग में एक ट्रेन के डिब्बे से बाहर फेंक दिया गया। (1893)
② नेटाल इंडियन कांग्रेस (1894)
③ काला अधि० व एशियाई पंजीकरण अधि० (1906)
④ टॉल्सटॉय फार्म (1910)
⑤ मतदान कर का निरसन (1914)

गांधीवादी रणनीति के मौलिक विचार

↳ हिंद स्वराज

① निष्क्रिय प्रतिरोध ② अहिंसा ③ सत्याग्रह
④ स्वराज (स्वशासन) ⑤ सत्य ⑥ स्वदेशी एवं आ० आत्मनिर्भरता। ⑦ सा० सुधार ⑧ रचनात्मक कार्यक्रम
⑨ प० विचारकों का प्रभाव
↳ टॉल्सटॉय की ईश्वर का साम्राज्य आपके भीतर है
↳ रस्किन की 'अनटू दिस लास्ट'
↳ थोरो की सविनय अवज्ञा

गांधी के नेतृत्व में प्रारंभिक जन आंदोलन

① चंपारण सत्याग्रह (1917)
↳ चंपारण कृषि अधि०
② खेड़ा सत्याग्रह (1918)
↳ कर संग्रह को निलंबित
③ अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918)
↳ 35% वेतन वृद्धि

इन तीनों सत्याग्रहों का महत्व

① सत्याग्रह को एक जन उपकरण
↳ विरोध की एक नई भाषा के रूप में
② शहरी - ग्रामीण विभाजन को कम करना।
③ यथार्थवादी व परिणामोन्मुख दृष्टिकोण।
④ गांधी की सार्वजनिक छवि
⑤ उप - ठेकेदार

महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम

① खादी व स्वदेशी का प्रचार-प्रसार (चरखा)
② विदेशी वस्तुओं व संस्थानों का बहिष्कार
③ हिंदू - मुस्लिम एकता।
④ अस्पृश्यता का उन्मूलन
⑤ राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा देना।
⑥ ग्राम पुनर्निर्माण व ग्रामीण उत्थान
⑦ महिलाओं की भागीदारी
⑧ शराबबंदी व सा० सुधार

गांधी जी रणनीतियाँ जिसने उन्हें एक जन नेता बनाया

① सत्याग्रह - अहिंसक प्रतिरोध
↳ चंपारण सत्याग्रह 1917
② जन-सामान्य से जुड़ाव → खादी आंदोलन
③ स्थानीय मुद्दों को राष्ट्रवाद से जोड़ना
↳ गुरुवायुर सत्याग्रह
④ नैतिक एवं धा० अपील → नमक मार्च 1930
⑤ समावेशिता - महिलाएँ, दलित, ग्रामीण
⑥ प्रतीकवाद एवं सरलता
⑦ स्वैच्छिक पीड़ा एवं उपवास
↳ पूना पैक्ट के दौरान आमरण अनशन
⑧ विकेन्द्रीकृत जन लामबंदी → असहयोग आंदोलन

गांधीवादी राष्ट्रवाद व उनके पूर्ववर्ती राष्ट्रवाद के बीच तुलना

पूर्ववर्ती	गांधीवादी राष्ट्रवाद
① (M) ब्रिटिश व्यवस्था में सुधार, (E) स्वराज	① आत्मबल पर ध्यान
② उच्च वर्ग का नेतृत्व	② जन नेतृत्व
③ सामूहिक भागीदारी↓	③ ग्रामीण भारत भी शामिल
④ M → संवैधानिक तरीका, E → बहिष्कार, स्वदेशी	④ सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा
⑤ प० उदारवाद, संसदीय शा०	⑤ सत्य, अहिंसा, स्वशासन
⑥ धर्मनिरपेक्ष	⑥ आत्मनिर्भरता ↑
⑦ प्रतीकों का उपयोग ↓	⑦ धर्म के नैतिक आध्यात्मिक तत्वों को राष्ट्रवाद में स्वीकृत
⑧ अंग्रेजी प्रधान याचिकाएँ व भाषण	⑧ नमक, चरखा, खादी
⑨ आ० सुधार, धन निष्कासी सिद्धांत	⑨ स्थानीय भाषा में संचार

अन्य समकालीन नेताओं के साथ गांधी की तुलना

① गांधी → सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह,
② अंबेडकर → सा० न्याय, समानता, जाति उन्मूलन
③ टैगोर → सार्वभौमिक मानवतावाद
④ बोस → उग्रवादी राष्ट्रवाद, समाजवाद

⑤ नेहरू → लोकतांत्रिक समाजवाद व धर्मनिरपेक्षवाद
⑥ वल्लभभाई पटेल → व्यावहारिक राष्ट्रवाद, एकता

10. जनआंदोलनों का दौर प्रारंभ

पृष्ठभूमि
① रौलेट एक्ट – भारतीय सत्याग्रह
② प्रथम विश्व युद्ध ③ मोंटागु-चेम्सफोर्ड सुधार
④ क्रांतिकारी गतिविधियाँ

रौलट सत्याग्रह
① 6 अप्रैल 1919 → देशव्यापी हड़तालें
② 9 अप्रैल 1919 → 20K लोगों का विरोध जुलूस
राम नवमी का उत्सव का इस्तेमाल
③ गांधी की गिरफ्तारी व किचलू व सत्यपाल के निर्वासन
④ 13 अप्रैल 1919 → बैसाखी त्यौहार के दौरान जलियांवाला बाग कांड – 379 लोग मारे गए
⑤ जनरल डायर को हटाने व वायसराय लॉर्ड चेम्सफोर्ड को वापस बुलाने की माँग
⑥ अहमदाबाद में होम रूल लीग व सत्याग्रह
⑦ वल्लभभाई पटेल व इंदुलाल याज्ञिक
↳ शांति की अपील की परंतु → दंगे जारी रहे
⑧ 14 अप्रैल 1919 → गांधी – सविनय अवज्ञा को निलंबित करने व अहिंसा को कायम रखना

परिणाम
→ गांधी को भारतीय रा० में सबसे आगे लाना
→ विविध सा०, धार्मिक व क्षेत्रीय समूह एकजुट
→ राष्ट्रवाद का जन आधारित संघर्ष में बदलना
↳ दो होम रूल लीग (एनी बेसेंट व तिलक)

खिलाफत आंदोलन
उद्भव → ओटोमन खलीफा की रक्षा के लिए उभरा
प्रकृति → अखिल-इस्लामिक भावना में निहित लेकिन
साम्राज्यवाद-विरोधी व राष्ट्रवादी आवेगों से प्रेरित
गांधी की भागीदारी → समावेशन
↳ 1920 में खिलाफत व असहयोग आंदो० का विलय

हिंदु-मुस्लिम एकता
① अंतरधार्मिक प्रतीक
② मुसलमानों ने गोहत्या से परहेज किया
③ हिंदुओं को मस्जिदों में आमंत्रित किया गया
④ संयुक्त सार्वजनिक विरोध प्रदर्शन व एकजुटता
→ मुसलमानों में रा० जागृति
→ खिलाफत सम्मेलन व असहयोग निर्णय
↳ मई 1920 की शांति संधि ने तुर्क साम्राज्य

कमजोरियाँ
① धा० आधार ② तुर्की पर निर्भरता
③ अल्पकालिक एकता ④ स्पष्ट रणनीति का अभाव

असहयोग आंदोलन

कारण
① दमनकारी कानून (रोलेट एक्ट की तरह)
② जलियांवाला बाग नरसंहार (1919)
③ संवैधानिक सुधारों की विफलता
④ प्रथम विश्व युद्ध के बाद व्यापक असंतोष
⑤ खिलाफत का मुद्दा
⑥ सत्याग्रह व अहिंसा में विश्वास

आंदोलन की शुरुआत व प्रारंभिक चरण (1920–21)
↳ 1 अगस्त 1920 – आंदो० शुरू
(i) उपाधियों व मानद पद का समर्पण
(ii) सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यों का बहिष्कार
(iii) सरकारी स्कूलों व कॉलेजों से किनारा
(iv) वकीलों व वादकारियों द्वारा ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार
(v) ब्रिटिश अभियानों के लिए सैन्य सेवा से इंकार
(vi) विधान परिषदों के चुनाव का बहिष्कार
(vii) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार व राष्ट्रीय संस्थाओं का प्रचार

अगला चरण – विजयवाड़ा कांग्रेस (मार्च 1921)
3 लक्ष्य निर्धारित
(i) 1 करोड़ कांग्रेस सदस्य
(ii) तिलक स्वराज कोष के लिए ₹ 1 करोड़
(iii) 20 लाख चरखे वितरित

तीसरे चरण की मुख्य विशेषताएँ (1921 के मध्य से अंत तक)
जुलाई 1921 – मो० अली ने मुसलमानों के लिए ब्रिटिश सेना में सेवा करना धा० रूप से गैर कानूनी घोषित किया।
1921 नवंबर → प्रिंस ऑफ वेल्स की यात्रा बाधित।
व्यापक समर्थन
↳ हड़तालें, प्रदर्शन व दंगे
↳ कई शहरों में सफल बहिष्कार

चौथा चरण (1921 के अंत में – 1922 के प्रारंभ में)
(i) कांग्रेस के स्वयंसेवकों
(ii) चुनिंदा क्षेत्रों में कांग्रेस द्वारा प्रांतीय सविनय

अवज्ञा की अनुमति दी गई
(iii) सरकार की सख्ती तेज

आंदो० का प्रभाव

(i) छात्र बहिष्कार → 800 राष्ट्रीय विद्यालय / कॉलेज स्थापित किए गए।
(ii) वकील बहिष्कार → C. R. दास, मोतीलाल नेहरू
(iii) विदेशी कपड़ों का बहिष्कार → एक वर्ष में आयात 102 करोड़ रु से घटकर 57 करोड़ रु हो गया।
(iv) शराब का बहिष्कार → PJ में रु 33 लाख की गिरावट

असहयोग आंदो० का क्षेत्रीय प्रसार

(i) बंगाल → करों के विरुद्ध आंदो० चलाया
(ii) आंध्र प्रदेश → विजयवाड़ा कांग्रेस अधि०, नो-टैक्स आंदो०
(iii) केरल (मालाबार) → मोपला विद्रोह (1921)
(iv) दिल्ली व संयुक्त प्रांत → प्रिंस ऑफ वेल्स की यात्रा पर धरना
(v) UP → अवध — किसान सभा

आंदोलन का महत्व

① सभी वर्गों व क्षेत्रों में व्यापक भागीदारी
↳ 30000 से अधिक छात्रों ने सरकारी स्कूल छोड़ दिए
② धा० समुदायों का एकीकरण → खिलाफत आंदो०
③ अहिंसक समुदायों का एकीकरण → चरखा, खादी
④ ब्रिटिश हुकूमत से सीधी टक्कर
⑤ रा० हथियार के रूप में बहिष्कार → C.R. दास
⑥ कांग्रेस एक जन मंच बन गई → नागपुर सत्र 1920
⑦ गांधीजी के नेतृत्व का उदय →

आंदो० का पतन व कमजोरियाँ

① चौरी-चौरा घटना (फरवरी 1922)
② वापसी के बाद ठोस योजना का अभाव
③ कुछ क्षेत्रों व वर्गों से सीमित भागीदारी
④ ब्रिटिश सरकार द्वारा दमन
⑤ आ० कठिनाइयाँ व थकान
⑥ राष्ट्रीय आंदोलन के भीतर विभाजन
⑦ हिमालय जितनी बड़ी भूल (सुभाष चंद्र बोस)

आंदो० के महत्व : भविष्य के संघर्ष की नींव का निर्माण।

3 प्रमुख पहलें

(i) विधायिकाओं में परिषद का प्रवेश
(ii) UP, पंजाब व बंगाल जैसे क्षेत्रों में हिंसक
(iii) गांधी का रचनात्मक कार्यक्रम

स्वराजवादी	परिवर्तन विरोधी
① मोतीलाल नेहरू, C.R. दास, विट्ठल भाई पटेल	① C. राजगोपालाचारी, वल्लभभाई पटेल
② विधान परिषदों में प्रवेश करना चाहते थे व ब्रिटिश नीतियों से भीतर से लड़ना चाहते थे	② परिषदों का बहिष्कार
③ 1923 में स्वराज पार्टी गठन	③ खादी, शिक्षा व एकता को बढ़ावा
④ 1923 में चुनाव लड़ा व केंद्रीय व प्रांतीय विधानमंडल में प्रवेश	④ समाज सुधार, ग्रामोत्थान व विदेशी वस्तु का बहिष्कार

अंतिम परिणाम → दोनों गुट कांग्रेस के अधीन रहे व एक दूसरे के प्रयासों के पूरक रहे

गांधीवादी रचनात्मक कार्यक्रम

① खादी व कताई
② ग्रामोद्योग
③ राष्ट्रीय शिक्षा
④ हिंदू-मुस्लिम एकता
⑤ अस्पृश्यता विरोधी प्रयास
⑥ विदेशी वस्त्र एवं शराब का बहिष्कार
⑦ आश्रमों व जमीनी स्तर की भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण उत्थान पर जोर दिया गया।

रणनीतिक महत्व

① निरंतरता ② हतोत्साहन व मोहभंग को रोकना
③ भविष्य के संघर्षों के लिए जनता को तैयार करना।
④ जनता निरंतर रा० आंदो० को कायम नहीं रख सकती
⑤ लोगों को गैर आंदो० अवधि के दौरान लगे रहने का एक तरीका है
⑥ कताई से भूमिहीन कृषि श्रमिकों को आत्मनिर्भरता

उपलब्धियाँ

↳ गांधी ने ऑल इंडिया स्पिनर्स एसोसिएशन स्थापना
→ 5000+ गांव, चार लाख + स्पिनरों / कातने व 20000+ बुनकरों को रोजगार

निष्कर्ष

① रणनीतिक मूल्य → जन आंदोलन चरणबद्ध है चरण
② आ० मूल्य → ग्रामीण गरीबों को रोजगार व राहत प्रदान की गई।
③ नैतिक मूल्य → एक आदर्श भारतीय गाँव के गांधी जी के दृष्टिकोण को मूर्त रूप दिया।

स्वराजवादी (1923-27)

① औपनिवेशिक निरंकुशता का प्रकटीकरण,
↳ केंद्रीय विधानसभा के अध्यक्ष → विट्ठलभाई पटेल

② जनविरोधी कानूनों पर अंकुश
③ नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा
④ राष्ट्रवादी गति को बनाए रखना
⑤ राष्ट्रवादी ताकतों की एकता
⑥ सशक्त संसदीय रणनीति

मुद्दे

① औपनिवेशिक व्यवस्था के भीतर कार्य करना
 ↳ भारत सरकार अधि० 1919
② कांग्रेस के भीतर विभाजन < स्वराजवादी / परिवर्तन विरोधी
③ सीमित विधायी शक्तियाँ
④ ब्रिटिश सहिष्णुता पर निर्भरता
⑤ जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं की आलोचना
⑥ जन लामबंदी का अभाव

पतन

① आंतरिक विभाजन → उत्तरदायित्ववादी व परिवर्तन विरोधी
② C.R. दास की मृत्यु (1925)
③ विधानमंडलों में सीमित प्रभाव
④ गांधीवादी रणनीति की पुनर्वापसी
⑤ सविनय अवज्ञा आंदो० का उदय

साइमन कमीशन (1927)

विरोध → सर्व-श्वेत संरचना, साइमन वापस जाओ
 ↳ लाला लाजपत राय → मृत्यु

प्रस्ताव

① डोमिनियन स्थिति
② मौलिक अधिकार की गारंटी
③ सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार
④ अलग निर्वाचन क्षेत्र नहीं (मुसलमानों सहित)
⑤ धर्मनिरपेक्ष राज्य
⑥ भाषाई प्रांत

परिणाम

① मुस्लिम लीग ने स्वीकार नहीं किया
② जवाहरलाल नेहरू व सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में कांग्रेस ने नेहरू रिपोर्ट की आलोचना की

कलकत्ता कांग्रेस संकल्प (1928)

↳ युवा गुट के दबाव के कारण कांग्रेस ने एक सशर्त प्रस्ताव पारित किया
↳ ब्रिटिश सरकार ने 31 दिसंबर 1929 तक नेहरू रिपोर्ट

लाहौर अधिवेशन (1929)

↳ पूर्ण स्वराज की घोषणा
↳ प्रथम स्वतंत्रता दिवस (26 जनवरी 1930)
 ↳ पूर्ण स्वराज संकल्प, भविष्य के जन आंदो०

11. भारत में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद - चरण II (1920-30)

वैश्विक घटनाओं एवं परिवर्तनों का प्रभाव

① रूसी क्रांति (1917)
② प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति (1919)
③ आयरिश स्वतंत्रता संग्राम → गुरिल्ला रणनीति
④ अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद का विकास → M.N रॉय
⑤ चीनी क्रांति (1920)

विश्वास व विचार

① सशस्त्र संघर्ष आवश्यक → HSRA द्वारा केंद्रीय विधानसभा पर बमबारी
② संवैधानिक सुधारों की अस्वीकृति → भारत सरकार अधि० 1919
③ समाजवादी आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता
④ अंतर्राष्ट्रीयवादी दृष्टिकोण
⑤ युवा लामबंदी
⑥ सांस्कृतिक दावा

प्रमुख नेता

① भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव
② चंद्रशेखर आजाद
③ राम प्रसाद बिस्मिल
④ सूर्य सेन (मास्टर दा)
⑤ प्रीतिलता वादेदार
⑥ जतिन दास
⑦ अनुशीलन समिति (बंगाल)
⑧ युगांतर पार्टी (बंगाल)

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के प्रथम चरण से तुलना

प्रथम चरण (1910 से पूर्व)	दूसरा चरण (1920-30)
① राष्ट्रवादी, ब्रिटिश विरोधी	① राष्ट्रवादी, ब्रिटिश विरोधी व समाजवादी
② अरबिंदो घोष, सावरकर	② भगत सिंह, चंद्रशेखर
③ लक्षित हत्याएँ, गुप्त बम	③ समन्वित जन कार्रवाई
④ सीमित व स्थानीय	④ रूसी, आयरिश, चीनी
⑤ छोटे व स्थानीयकृत	⑤ HSRA जैसे अधिक संगठित समूह
⑥ न्यूनतम जन भागीदारी	⑥ मीडिया, घोषणापत्र, अदालतें

सफलता

① रा० चेतना की जागृति → पूर्ण स्वराज
② प्रतिष्ठित शहीद
③ युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत
④ बाद के आंदो० से जुड़ा
⑤ परीक्षणों का प्रभावी उपयोग

विफलता

① क्रूर दमन → बंगाल रेगुलेशन एक्ट III
② जनाधार का अभाव

UnderstandUPSC

③ आंतरिक फूट व विश्वासघात
④ कोई स्पष्ट रा० कार्यक्रम नहीं
⑤ संगठित नेतृत्व का अभाव

12. सविनय अवज्ञा आंदोलन

मूल पृष्ठभूमि
① साइमन कमीशन (1928) ② नेहरू रिपोर्ट (1928)
③ कांग्रेस का लाहौर अधि० (1929) ④ 11 सूत्री मांगे
⑤ क्रांतिकारी चरण II का अंत → HSRA का दमन

रणनीति व कार्यप्रणाली
① प्रतीकात्मक शुरूआत → नमक मार्च 12 मार्च 1930
② नमक का मुद्दा रणनीतिक रूप से चुना गया
③ कोई कर अभियान नहीं → बारदोली (गुजरात)
④ बहिष्कार
⑤ महिलाओं की भागीदारी
⑥ ग्रामीण पुनर्गठन

भागीदारी का स्तर
① छात्र → इलाहाबाद विश्वविद्यालय
② किसान → UP, गुजरात, बिहार
③ महिलाएँ → कमलादेवी चट्टोपाध्याय
④ मुसलमान → खिलाफत की विफलता
⑤ व्यापारी वर्ग
⑥ द० भारत
⑦ उ०-प० सीमांत प्रांत → खान अब्दुल गफ्फार खान

ब्रिटिश प्रतिक्रिया
① क्रूर दमन → 90000+ (गांधी+नेहरू) लोगों को जेल
② धरासणा नमक छापा → अंतर्राष्ट्रीय मीडिया कवरेज
③ सेंसरशिप व प्रतिबंध
④ गांधी इरविन समझौता (मार्च 1931)

सफलता
① जन लामबंदी → पहली बार — जनता, महिलाएँ, किसान
② अंतर्राष्ट्रीय ध्यान
③ राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया
④ अगले चरण के लिए प्रक्रिया का निर्धारण
⑤ अंग्रेजों पर दबाव

विफलता
① गांधी-इरविन समझौते को एक समझौते के रूप में देखा
② भगत सिंह व उनके साथियों की सजा
③ मुस्लिम अलगाव
④ कोई तत्काल संवैधानिक लाभ नहीं
⑤ दमन ने गति को कमजोर किया
⑥ जूडिथ ब्राउन → धारणा कि इसने कई लोगों को प्रेरित किया, इसने उन अल्पसंख्यकों को भी अलग थलग कर दिया जो कांग्रेस को हिंदू बहुसंख्यक हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले के रूप में देखते थे।

गांधी-इरविन समझौता (मार्च 1931)
① आंदो० का स्थगन
② गांधी लंदन में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेंगे
③ रा० कैदियों की रिहा + शांतिपूर्ण धरने की अनुमति

गोलमेज सम्मेलन (1930-32)
① प्रथम (1930) → कांग्रेस ×
② द्वितीय (1931) → गांधी ✓
③ तृतीय (1932) → गांधी ×

जाति व भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (INM)
① सांप्रदायिक पुरस्कार (1932)
↳ PM रैमसे मैकडोनाल्ड
↳ पृथक निर्वाचन → पहली बार दलित वर्ग
↳ फूट डालो राज करो
② गांधी की प्रतिक्रिया
↳ पृथक निर्वाचिका का विरोध
↳ यरवदा जेल में आमरण अनशन शुरू
③ पूना पैक्ट
↳ पृथक निर्वाचन क्षेत्र को हटा दिया
↳ संयुक्त निर्वाचन क्षेत्रों में दलित वर्गों को आरक्षण
↳ दलितों की शिक्षा व सा० उत्थान का प्रावधान

गांधी	अंबेडकर
① वर्ण व्यवस्था ✓ अस्पृश्यता ×	① जाति व वर्ण को खारिज
② हरिजन	② हरिजन शब्द खारिज
③ हिंदू धर्म के भीतर सुधारों के माध्यम से नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान पर ध्यान	③ कानूनी व रा० उपायों के माध्यम से संरचनात्मक परिवर्तन
④ पृथक निर्वाचन क्षेत्रों का विरोध	④ स्वतंत्र रा० आवाज
⑤ मंदिर प्रवेश व हरिजन उत्थान	⑤ शैक्षिक सशक्तिकरण, कानूनी सुरक्षा उपाय, संवैधानिक अधिकार पर ध्यान
⑥ हिंदू ढांचे के भीतर सुधार	⑥ बौद्ध धर्म में परिवर्तित
⑦ हिंदू एकता बनाए रखना	⑦ पूना पैक्ट को दबाव के रूप में देखा।
⑧ अस्पृश्यता की ओर ध्यान	⑧ संवैधानिक समानता
⑨ हरिजन सेवक संघ (1932)	⑨ शेड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन

Understand UPSC

⑩ आत्मकथा, अस्पृश्यता ⑥ जाति का उन्मूलन पर भाषण

चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन (1935-39)

① भारत सरकार अधि० 1935
(i) प्रांतीय स्वायत्तता
(ii) द्विसदनीय विधायिकाएँ
(iii) प्रांतीय विधानसभाओं के लिए चुनाव
(iv) राज्यपाल ने वीटो शक्ति अपने पास रखी

कांग्रेस में आंतरिक विभाजन

① कांग्रेस के भीतर बहस
(ii) राजेंद्र प्रसाद व सरदार पटेल
(iii) जवाहरलाल नेहरू शुरू में अनिच्छुक

मंत्रालयों में किया गया कार्य (1937-39)

↳ 11 प्रांतों में से 5 प्रांतों में कांग्रेस को बहुमत
↳ 13% आबादी ने मतदान

सुधार

① कृषि सुधार → बेगार खत्म, भू-राजस्व ↓
↳ बंगाल-मद्रास में काश्तकारी सुधार
② नागरिक सुविधा → सार्व० सुरक्षा अधि० (बंबई, मद्रास), रा० कैदियों को रिहा किया गया।
③ शिक्षा व सा० सुधार → प्राथमिक शिक्षा का विस्तार
↳ हरिजन कल्याण, सिविलसेवा में दलित
④ श्रम व श्रमिकों के अधिकार
↳ 8 घंटे के कार्यदिवस को बढ़ावा
⑤ महिला अधिकार → शिक्षा
↳ दहेज विरोधी अभियान

उदा०

(i) मद्रास में C. राजगोपालाचारी ने हिंदी को बढ़ावा
(ii) U.P में गोविंद वल्लभपंत ने श्रमिक समर्थक कानून
(iii) बंबई में B.G. खेर ने कर ↓ व सहकारी खेती ↑

मंत्रालय के कार्य में बाधाएँ

(i) गवर्नर का हस्तक्षेप
(ii) सांप्रदायिक तनाव (लीग की पीरपुर रिपोर्ट 1938)
(iii) आंतरिक कांग्रेस संघर्ष
(iv) प्रशासनिक अनुभवहीनता

चरण का अंत (1939): मंत्रालयों का त्याग-पत्र

कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने त्याग-पत्र क्यों दिया

(i) सलाह के बिना भारत को द्वितीय विश्व युद्ध
(ii) युद्ध के बाद स्पष्ट स्वतंत्रता की मांग → अंग्रेजों ने इनकार कर दिया।

त्याग-पत्र का महत्व

(i) संवैधानिकता से टकराव
(ii) रा० शून्यता उत्पन्न → लीग ने मुक्ति दिवस
(iii) भारत छोड़ो आंदो० (1942) → रा० के ध्रुवीकरण

अगस्त प्रस्ताव (1940)

पृष्ठभूमि

(i) II विश्व युद्ध में ब्रिटेन को भारतीय समर्थन की आवश्यकता
(ii) जापान युद्ध में प्रवेश

मुख्य प्रस्ताव

(i) डोमिनियन स्टेटस
(ii) भारतीयों का → वायसराय की कार्यकारी परिषद का विस्तार
(iii) संवि. निर्मात्री संस्था
↳ भारतीय द्वारा संविधान का निर्माण
↳ अल्पसंख्यकों की सहमति आवश्यक
(iv) अल्पसंख्यक व दलित वर्गों की सुरक्षा का आश्वासन

महत्व

(i) पहली बार संवि. निर्माण का अधिकार
(ii) कांग्रेस व मुस्लिम लीग के बीच विभाजन गहरा
(iii) राष्ट्रवादी मांगों पूरा करने में विफल के कारण व्यक्तिगत सत्याग्रह

व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940-41)

पृष्ठभूमि → II विश्व युद्ध में भारत की भागीदारी की घोषणा कर दी

उद्देश्य

(i) जबरन युद्ध में भागीदारी
(ii) उपनिवेशवाद के विरोधी रुख

विशेषताएँ

(i) 17 Oct 1940 को गांधी द्वारा प्रारंभ
(ii) चयनित व्यक्तियों द्वारा अहिंसक, प्रतीकात्मक
(iii) पहले सत्याग्रही → विनोबा भावे

महत्व

(i) युद्ध के प्रति नैतिक विरोध
(ii) अनुशासित सत्याग्रह का प्रदर्शन
(iii) भारत छोड़ो आंदो० (1942) का अग्रदूत
(iv) संतुलित उपनिवेशवाद-विरोध व फासीवाद विरोध

क्रिप्स मिशन (मार्च 1942)

पृष्ठभूमि

(i) II विश्व युद्ध एक निर्णायक मोड़ पर (जापान का भारत की ओर बढ़ना)

(ii) अंग्रेजों को पूर्ण भारतीय समर्थन की आवश्यकता।
(iii) अमेरिका, चीन व भारतीय राष्ट्रवादियों का दबाव
(iv) सर स्टैफोर्ड क्रिप्स को भारतीय नेताओं से बातचीत के लिए भेजा

मुख्य प्रस्ताव

(i) युद्ध के बाद भारत के लिए डोमिनियन स्टेटस
(ii) संवि. सभा का गठन
↳ प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा निर्वाचित
↳ रियासतें नामांकित व्यक्ति भेजती थी
(iii) प्रांत या रियासत इससे बाहर रह सकती है
(iv) युद्ध के दौरान ब्रिटिश रक्षा नियंत्रण बरकरार
(v) भारतीय कार्यपरिषद में शामिल, रक्षा → ब्रिटिश

कांग्रेस की प्रतिक्रिया → अस्वीकार
↳ विभाजन वाला प्रस्ताव अस्वीकार्य
मुस्लिम लीग ने भी अस्वीकार

महत्व
(i) मिशन असफल रहा
(ii) भारत छोड़ो आंदो० (अगस्त 1942) में प्रारंभ
(iii) पहली बार विभाजन को अप्रत्यक्ष रूप से स्वीकार

13. अंतिम चरण - स्वतंत्रता का मार्ग

भारत छोड़ो आंदो० (8 अगस्त 1942)

पृष्ठभूमि
1. क्रिप्स मिशन की विफलता
2. II विश्व युद्ध का प्रभाव
3. बढ़ती राष्ट्रवादी भावना
4. ब्रिटिश वादों से मोहभंग

अन्य आंदोलनों से भिन्नता
1. पूर्ण स्वतंत्रता की आ मांग
2. बिना तैयारी के सामूहिक विद्रोह
3. गांधीजी → करो या मरो
4. नेतृत्व का अभाव
5. व्यापक भागीदारी → अरुणा आसफ अली
6. हिंसा व तोड़फोड़
7. समानांतर सरकारों का गठन
8. व्यापक पहुँच → उषा मेहता → सीक्रेट कांग्रेस रेडियो

समानांतर सरकारें
1. बलिया (अगस्त 1942) → चित्तू पांडे
2. तमलुक (1942-44) → सतीश चंद्र सामंत
3. सतारा (1943-46) → नाना पाटिल
4. तलचेर → ओडिशा में

प्रभाव
1. व्यापक अशांति
2. भूमिगत नेतृत्व का उदय
3. सत्ता हस्तांतरण की अनिवार्यता का एहसास
4. युद्धोत्तर वार्ता के लिए मंच तैयार
5. राष्ट्रवादी भावना को मजबूत किया
6. INA व बोस के प्रयासों को महत्व मिला।

विफलता
1. स्वाधीनता का तात्कालिक उद्देश्य प्राप्त नहीं
2. समानांतर सरकारें अधिक समय तक नहीं चली
3. जन एकता का अभाव → ML, हिंदू महासभा
4. गंभीर सरकारी दमन → 1 लाख + लोग गिरफ्तार
5. संगठित योजना का अभाव

भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA)

उद्देश्य
1. सशस्त्र संघर्ष द्वारा भारत की पूर्ण स्वतंत्रता
2. धर्म, क्षेत्र व लिंग के आधार पर भारतीयों को एकजुट करना
3. ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की समाप्ति
4. स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं को सशक्त
5. अंतर्राष्ट्रीय समर्थन → जर्मनी → जापान
6. एक स्वतंत्र, धर्मनिरपेक्ष व आधुनिक भारत की स्थापना

महत्व
1. ब्रिटिश शासन को सशक्त चुनौती
2. ब्रिटिश धारणा में बदलाव
3. सशस्त्र बलों में विद्रोह का चरण
4. राष्ट्रवादी प्रतीक
5. INA परीक्षणों के दौरान सार्व. समर्थन
6. महिलाओं की भागीदारी → झांसी रेजिमेंट

सीमाएँ
1. जापान पर निर्भरता।
2. सीमित सैन्य सफलता।
3. कम साजोसामान व संसाधन
4. एक सहयोगी बल के रूप में माना जाता है
5. गतिविधियों की छोटी अवधि
6. सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु (1945)
7. INA ट्रायल (1945-46)
↳ शाहनवाज खान, ढिल्लों व सहगल → रेड फोर्ट मार्शल

वेवेल योजना

विशेषताएँ

(i) वायसराय की कार्यकारी परिषद

(ii) जाति हिंदुओं व मुसलमानों → समान प्रतिनिधित्व

(iii) गवर्नर-जनरल मंत्रिस्तरीय सलाह

(iv) विभिन्न दलों के प्रतिनिधि परिषद नामांकन

शिमला सम्मेलन → लॉर्ड वेवेल

↳ 25 जून, 1945 को वेवेल योजना

मुस्लिमलीग का रूख

↳ सभी मुस्लिम सदस्य मुस्लिमलीग द्वारा नामांकित

कांग्रेस का रूख

↳ विशुद्ध रूप से जातीय हिंदू पार्टी

शिमला सम्मेलन का प्रभाव

① आम सहमति तक पहुँचने में विफलता

② गहरे सांप्रदायिक विभाजन उजागर हुए

③ अंतरिम सरकारी योजना की अटका

④ प्रत्यक्ष कार्यवाई दिवस का मार्ग प्रशस्त

⑤ अंग्रेजों द्वारा मुस्लिम लीग का तुष्टीकरण

रॉयल इंडियन नेवी (RIN) विद्रोह-1946

कारण

① खराब परिस्थितियों से प्रेरित

② नस्लीय भेदभाव

③ बढ़ती राष्ट्रवादी भावनाओं से प्रेरित

विद्रोह का क्रम

(i) जय हिंद, इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगाए

(ii) बंबई में आम हड़ताल सहित नागरिक समर्थन

(iii) मांग → समान अधिकार, बेहतर भोजन

विद्रोह का अंत

(i) सैन्य विफलता का पतन

(ii) राष्ट्रव्यापी विद्रोह

(iii) व्यापक नागरिक समर्थन

(iv) रा० सीमाओं के पार एकता

(v) ब्रिटिश सदमा व भय

(vi) वापसी के लिए आग्रह किया

1945-46 चुनाव

पाकिस्तान निर्माण की मांग के पक्ष

(i) शिमला के सम्मेलन के बाद → ब्रिटेन में लेबर पार्टी

(ii) पाकिस्तान पर लीग का फोकस

(iii) ब्रा० सामंतवादी → उलेमा, पीर, सज्जादानशीन

(iv) कांग्रेस का अभियान

(v) कांग्रेस का गलत निर्णय

(vi) मुस्लिम लीग की सफलता

(vii) चुनाव के बाद का एहसास

मुस्लिम सीटों के लिए कांग्रेस की रणनीति (1945-46) चुनाव

① कांग्रेस में आंतरिक विभाजन

↳ मौलाना आजाद

↳ नेहरू, पटेल

② बिहार मामला → कुल चुनाव निधि का 1/5 हिस्सा खर्च

③ चुनौतियाँ → कांग्रेस, लीग की ब्रा० अपील का मुकाबला नहीं कर सकी

④ परिणाम → कांग्रेस का आरंभिक आशावाद फीका पड़ गया

↳ लीग मुस्लिम सीटों पर हावी हो जाएगी

⑤ चुनाव परिणाम

→ कुल सीटें → 102

→ कांग्रेस → 57

→ ML → 30

→ 1937 में 4.8% की तुलना में 76% मुस्लिम वोट लीग को मिले

14. राज पर अंतिम पर्दा : अंग्रेजों की बाहर निकलने की योजना

कैबिनेट मिशन प्रस्ताव (1946)

① पाकिस्तान की अस्वीकृति

② त्रिस्तरीय सरकार → संघ, प्रांतों, प्रांतों के समूह

③ प्रांतीय समूहन : प्रांतों का → A, B, C

↳ A → हिंदू-बहुल प्रांत

↳ B, C → मुस्लिम-बहुल प्रांत

④ संवि० सभा (389 सदस्य)

↳ आनुपातिक प्रतिनिधित्व

⑤ स्वायत्तता व संप्रभुता

⑥ रियासत → ब्रिटिश सर्वोच्चता से मुक्त

⑦ अंतिम अंतरिम सरकार → सभी प्रमुख रा० दलों का समर्थन

कैबिनेट मिशन योजना - समूहीकरण खंड व परिणाम

कांग्रेस की व्याख्या

(i) एकल संवि. के कारण → लीग का विरोध
(ii) धा० आधार पर प्रांतों के समूहीकरण का विरोध
(iii) अनिवार्य सामूहीकरण → प्रांतीय स्वायत्तता का उल्लंघन
(iv) रियासतों से निर्वाचित प्रतिनिधित्व की कमी की आलोचना।

ML की व्याख्या

(i) अनिवार्य समूहीकरण का कंज
(ii) समूह B व C को मुस्लिम संस्थाओं के रूप में विकसित

विवाद

(i) 6 जून 1946 → ML ने योजना स्वीकार की
(ii) 24 जून → कांग्रेस ने स्वीकार
(iii) जुलाई 1946 → संवि. सभा के लिए चुनाव
(iv) 10 जुलाई → नेहरू → संवि. सभा संप्रभु है
(v) 29 जुलाई → लीग योजना से हट गई
(vi) 16 अगस्त → प्रत्यक्ष कार्यवाई दिवस की शुरूआत

कैबिनेट मिशन की विफलता

1. समूहीकरण में अस्पष्टता
2. विरोधी उद्देश्य → धा०-आधारित समूहों के खिलाफ
3. नेहरू का वक्तव्य → संवि. सभा संप्रभु
4. सांप्रदायिक तनाव व प्रत्यक्ष कार्यवाई
5. ब्रिटिश कुप्रबंधन
6. अंतरिम सरकार व लीग की भूमिका
   - ब्रिटिश cabinet में 25 Oct को लीग शामिल
   - लियाकत अली खान के बजट ने कांग्रेस गठबंधन वाले पूँजीपतियों को अलग-थलग किया
   - गांधी ने दो असंगतताओं वाले गठबंधन के खिलाफ चेतावनी दी
   - लीग ने कैबिनेट मिशन योजना के दीर्घकालिक लक्ष्य को अस्वीकार करते हुए संवि. सभा में शामिल होने से इंकार किया।

एटली का वक्तव्य (फरवरी 20, 1947)

(i) मुस्लिम बहुल क्षेत्र संवि. सभा में शामिल नहीं
(ii) रियासतें ब्रिटिश सरकार के अधीन नहीं
(iii) वेवेल के स्थान पर माउंटबेटन वायसराय

कांग्रेस की प्रतिक्रिया

(i) एक से अधिक केंद्रों को सत्ता हस्तांतरण का समाधान कांग्रेस को स्वीकार्य था
(ii) बाद में पंजाब व बंगाल पाक में शामिल

माउंटबेटन योजना (3 जून, 1947)

(i) विभाजी मत → बंगाल व पंजाब विभाजन
(ii) सिंध स्वतंत्र निर्णय, NWFP व सिलहट में जनमत संग्रह
(iii) दो गणराज्य (भारत-पाक)
(iv) रियासत → भारत या पाक में शामिल होगी

कांग्रेस ने एकीकृत भारत को स्वीकार कर लिया था, इसलिए उनके अन्य सभी बिंदु पूरे हो जाएंगे जो निम्न हैं

(i) रियासतों की आजादी × < भारत / पाक] शामिल
(ii) बंगाल की स्वतंत्रता खारिज
(iii) हैदराबाद ने पाक में विलय खारिज किया
(iv) सीमा आयोग की स्थापना

भारतीय स्वतंत्रता अधि० (5 जुलाई 1947)

(i) भारत-पाक का वैध विभाजन व निर्माण
(ii) ब्रिटिश नियंत्रण व केंद्रीय विधायिका का भंग
(iii) निगरानी के लिए गवर्नर-जनरल, 1935 का अधि० नए संवि. बनने तक रहेगा

भारतीय स्वतंत्रता की घोषणा करने में ब्रिटिश जल्दबाजी का कारण

1. बढ़ता जन आंदो० व अशांति
2. प्रशासनिक दुर्बलता
3. आ० व सैन्य कमजोरी
4. अंतर्राष्ट्रीय दबाव
5. कैबिनेट मिशन योजना की विफलता
6. मुस्लिम लीग की प्रत्यक्ष कार्यवाई
7. लीग की बढ़ती ताकत
8. लेबर पार्टी की नीति

15. विविध

भारतीय राष्ट्रीय आंदो० में सांप्रदायिकता का उदय

सम्भावन

1. 1857 → लड़ाकू व गैर लड़ाकू जातियों का विभाजन
2. 1893 → गौरक्षा दंगे
3. 1905 → बंगाल का विभाजन

④ 1906 → अलग रा० प्रतिनिधित्व की मांग
⑤ 1909 → मार्ले मिंटो सुधार
⑥ 1915-16 → हिंदू रा० हितों की वकालत
⑦ 1921 → मोपला विद्रोह
⑧ 1932 → रैमसे मैकडोनाल्ड द्वारा सांप्रदायिक पुरस्कार
⑨ 1940 → ML की पाक की मांग
⑩ 1946-47 → प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस

कारण

① फूट डालो राज करो की ब्रिटिश नीतियाँ
② सांप्रदायिक इतिहासलेखन → जेम्स मिल
③ धा० संगठन → हिंदू महासभा, ML
④ सभी समुदायों का प्रतिनिधित्व करने में कांग्रेस की विफलता
⑤ रा० अवसरवादिता
⑥ आ० व सा० कारक → नौकरी के लिए प्रतिस्पर्धा / जमींदारी व कृषक / शहरी मध्यम वर्ग
⑦ धा० आंदो० → शुद्धि आंदो० व वहाबी आंदो०

प्रभाव

① राष्ट्रीय एकता का कमजोर होना
② आंदो० में कम भागीदारी
③ देश का विभाजन
④ सांप्रदायिक हिंसा
⑤ बड़े पैमाने पर विस्थापन

भारतीय राष्ट्रीय आंदो० में विदेशियों की भूमिका

① एनी बेसेंट → स्वशासन की वकालत
↳ होम रूल लीग की स्थापना 1916
② चार्ल्स फ्रीर एंड्रयूज → चंपारण व अहमदाबाद आंदो० में मध्यस्थता
③ मीराबेन (मेडलीन स्लेड) → गांधी का संदेश फैलाने में
④ सैमुअल स्टोक्स → उत्तराखंड में किसानों के साथ काम
↳ सेब की खेती की शुरुआत
↳ असहयोग आंदो० में शामिल
⑤ सिस्टर निवेदिता (मार्गरेट नोबल)
↳ विवेकानंद की आजीवन शिष्य, स्वदेशी आंदो०
⑥ विलियम वेडरबर्न → कांग्रेस की सहसंस्थापना 1885
⑦ हेनरी कॉटन → कांग्रेस में शामिल हुए
⑧ ए.ओ. ह्यूम → कांग्रेस की स्थापना
⑨ बी. जी. हॉर्निमन → प्रेस के माध्यम से जनमत का निर्माण, होमरूल आंदो० का समर्थन

महिलाओं की भूमिका

① विद्रोह का नेतृत्व → रानी लक्ष्मीबाई, झलकारीबाई
② कानूनी सुधार की वकालत → पंडिता रमाबाई
③ आंदो० में सहभागिता → सरला देवी चौधरानी
④ होमरूल आंदो० → एनी बेसेंट
⑤ समाज सुधारक → मार्गरेट कजिन
⑥ गांधीवादी सत्याग्रह के समर्थक → कस्तूरबा गांधी
⑦ क्रांतिकारी संलिप्तता → प्रीतिलता वाडेदार
⑧ धरासाणा सत्याग्रह → सरोजिनी नायडू
⑨ स्वदेशी को बढ़ावा → कमला देवी चट्टोपाध्याय
⑩ भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया → अरुणा आसफ अली
⑪ भूमिगत रेडियो सेवा → उषा मेहता
⑫ सशस्त्र बटालियन का नेतृत्व → लक्ष्मी सहगल
⑬ रा० नेतृत्व प्रदान → सरोजनी नायडू

महिलाओं के समक्ष चुनौतियाँ

① परिवारों व समुदायों का विरोध
② दमन व हिंसा का खतरा
③ शिक्षा व सूचना तक सीमित पहुँच
④ आंदोलनों के भीतर हाशियाकरण
⑤ दोहरा बोझ
⑥ जाति व वर्ग बाधाएँ
⑦ रूढ़िवादिता व प्रतीकवाद

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वैचारिक धाराएँ

① गांधीवादी → सत्याग्रह, अहिंसा
② समाजवादी → रूसी क्रांति (1917)
③ कट्टरपंथी क्रांतिकारी → समाजवादी आदर्शों से
④ साम्प्रदायिक एवं क्षेत्रीय विचारधाराएँ प्रेरित
↳ हिंदू महासभा व ML
↳ विशिष्ट धा० व क्षेत्रीय समुदाय
⑤ जनजातीय व हाशिए पर रहने वाले समूह
⑥ किसान → उचित कराधान, भूमि अधिकार
⑦ दलित → सा० न्याय, समानता, रा० प्रतिनिधित्व
⑧ महिला → सशक्तिकरण, औपनिवेशिक शासन व पितृसत्तात्मक संरचना

श्रमिक आंदो०

① प्रारंभिक चरण (पूर्व-1918) → चेतना का उद्भव
↳ बॉम्बे मिलहैंड्स एसोसिएशन (1890)
↳ काम के घंटे, सुरक्षा, स्वच्छता

② संगठित तालाबंदी की शुरुआत (1918-24)

↳ बंबई, अहमदाबाद, कलकत्ता हड़तालें
↳ ट्रेड यूनियन गठन
↳ मद्रास लेबर यूनियन (1918) → लाला लाजपत राय

③ वामपंथी विचारधारा व रा० संघवाद का उदय 1925-34

↳ मार्क्सवादी, समाजवादी धारा
↳ M.N. राय, एस.ए. डांगे, मुजफ्फर अहमद

④ विकास व बँटवारा 1935-47

↳ भारत सरकार अधि० 1935 → श्रम सुधार
↳ कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन 1934
↳ ग्रेट रेलवे स्ट्राइक 1946 → उसाज कर्मचारी

⑤ स्वतंत्रता के बाद का विकास

↳ ट्रेड यूनियन वैचारिक आधार पर विभाजित
↳ 1947 के बाद श्रम कानून विकसित

श्रमिकों की भूमिका

① बड़े पैमाने पर तालाबंदी व हड़तालें
↳ 1928 में बॉम्बे टेक्सटाइल हड़तालें
② राष्ट्रवादी आंदो० के लिए समर्थन
↳ सविनय अवज्ञा आंदो०
③ ब्रिटिश शासन पर आ० दबाव → 1920 की महान भारतीय प्रायद्वीपीय रेलवे हड़ताल
④ क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया
↳ मेरठ षड्यंत्र केस (1929)
⑤ ट्रेड यूनियनों का गठन

Understand UPSC

Templates — M.H

① XYZ शक्ति का भारत में योगदान
- सांस्कृतिक – धा०
- सा०
- रा० व प्रशासनिक
- आ०
- तकनीकी व सैन्य

② XYZ शक्ति का पतन
- विदेशी शक्ति का उभरना
- आंतरिक शक्ति का प्रभावित होना
  - धर्म
  - संस्कृति
- आंतरिक गतिविधियाँ (भ्रष्टाचार)

③ संप्रभु शक्ति अपने आप को कैसे संरक्षण करे
- कर / प्रावधान
- भूमि
- सेना
- विदेशी संबंध

④ Keyword & Ex.

MAD → उदा० से ही Point बनाओ

राष्ट्रवादी भावना
- गणेश व शिवाजी उत्सव
- स्वदेशी आं०
- प्रत्यक्ष कार्रवाई
- प्राचीन संस्कृति व परंपरा
- तिलक व लाला लाजपत राय

⑤ कारण या प्रभाव किसी Event के

National Event

रा० | आ० | अंतर्राष्ट्रीय | नीतियाँ | राष्ट्रीय हित

⑥ किसी संगठन या आंदोलन में नेता का महत्व

राष्ट्रीय हित व भावना | विचारधारा | रा० | जन भागीदारी | प्रशासनिक | प्रेस | धा० | भविष्य के नेताओं के लिए

सा० सुधार | अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव | संघर्ष

⑦ किसी आंदोलन या संगठन की सीमा

लक्ष्य | जन भागीदारी | धा० समूह | रणनीति | नेतृत्व | दमनकारी नीति | सांप्रदायिक

⑧ उत्तर लेखन में Format का ध्यान रखें

Pre event → Event → Post Event

Intro | Main Body | Conclu.

→ निष्कर्ष आधुनिक भारत में → तात्कालिक प्रभाव, दीर्घ अवधि प्रभाव, Summary

⑨ 'How far' → Demand लिखो, प्रश्न में और क्या है वो लिखो
↳ + व (−) भी लिखो

'Results' → (+) (−) दोनों लिखो

MAP → Diagram → Headings का ध्यान रखें।